

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित



वर्ष -14 अंक - 7 जुलाई -1, 2013

(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

मूल्य 7.50 रु.

सत्यम शिवम सुंदरम की ध्वनि ही पत्रकारिता की शंखध्वनि

माउण्ट आबू। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ.मानसिंह परमार ने ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग द्वारा 'समाज में शांति एवं अहिंसा की पुनर्स्थापना में मीडिया की भूमिका' विषय पर आयोजित चार दिवसीय मीडिया सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज में शांति और अहिंसा के अभाव के कारण सर्वमुखी विकास अवरूद्ध हो रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मा पुकार रही है कि इस वातावरण में आमूलचूल परिवर्तन के लिए अहिंसा को मूल मंत्र बनाया जाए।

भारत के विभिन्न प्रांतों के अलावा नेपाल व बर्मा से आए पांच सौ के लगभग मीडिया कर्मियों की उपस्थिति वाले हॉर्नमैनी हॉल में सारगर्भित भाषण के दौरान डॉ.परमार ने कहा कि कार्यपालिका पर से लोगों का विश्वास घटता जा रहा है और कार्यपालिका न्यायपालिका की आस्था कम करने पर तुली हुई है। ऐसे समय में करोड़ों लोग मीडिया की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। इसलिए हमें अपनी ताकत को समझना होगा और निष्पक्ष होकर सत्य को समाज के सामने रखना होगा। मीडिया की विश्वसनीयता को कायम रखना आज के समय में बहुत बड़ी चुनौति है। समाज के सर्वांगीण विकास में मीडिया अपनी भूमिका अदा कर लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ की तरह पांचवे वेद की संज्ञा भी पा सकता है। सत्यम शिवम सुंदरम की ध्वनि ही पत्रकारिता की शंखध्वनि है। प्रेस परिषद् का नियंत्रण इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर भी होना चाहिए ताकि



मीडिया महासम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.ओमप्रकाश, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ.मानसिंह परमार तथा अन्य।

उपभोक्तावाद व अपराध के प्रसार पर अंकुश का दायरा बढ़ाया जा सके।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि आज मीडिया भी मानता है कि जो अच्छी बातें हैं वह लोगों की जानकारी में लाई जानी चाहिए। अतीत में सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत परमात्मा की अवतरण भूमि है। गीता में भी भगवान ने कहा है कि जब जब धर्म की ग्लानि होती है तब मैं इस सृष्टि पर अवतरित होकर सतधर्म की स्थापना करता हूँ। जब हमारे जीवन में सत्यता नहीं होगी तब तक मूल्यों का विकास नहीं होगा। पापाचार, दुराचार व भ्रष्टाचार की आंधी को थामने के लिए मीडिया को सकारात्मक प्रयासों के सहारे आगे जाना होगा।

मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.ओमप्रकाश ने कहा कि मीडिया सामाजिक क्रांति का एक सशक्त माध्यम है और उससे समाज को बहुत

अपेक्षायें हैं। वर्तमान परिवेश में मीडिया की भूमिका बढ़ जाती है। आज मीडिया चाहे तो पूरी दुनिया को स्वर्ग बना सकता है। फिर से समाज में अहिंसा और शांति की पुनर्स्थापना के लिए मानवीय वृत्तियों में परिवर्तन लाने का दायित्व मीडिया को निभाना होगा।

ब्रह्माकुमारीज मल्टी मीडिया के निदेशक ब्र.कु.करुणा ने कहा कि अगले वर्ष में होने वाले आम चुनाव के कारण सारे विश्व की निगाहें भारत पर टिकी हुई हैं। वर्तमान परिदृश्य में परिवर्तन लाने के लिए जरूरी है कि मीडिया स्वच्छ छवि वाले जन प्रतिनिधियों को चुनने के लिए देशवासियों को प्रेरित करें। इस तरह हम स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना में सहभागी बन जायेंगे।

विजन वर्ल्ड न्यूज, इंदौर के सम्पादक आशीष गुप्ता ने कहा कि किसी भी आंदोलन में संलिप्त होने के

बजाए मीडिया को केवल सत्य - पाठकों, श्रोताओं व दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अन्ना हजारे के आंदोलन में मीडिया ने एक पक्षीय भूमिका निभायी और जब आंदोलन पिट गया तो नकारात्मक रूख अपना लिया। प्रतिस्पर्धा के दौर में मीडिया पर बाजारवाद हावी होता जा रहा है। जिसके कारण वह अपनी कलम का सही इस्तेमाल नहीं कर पाता है। आज बत्तीस पृष्ठों का अखबार भी हमें उतना प्रभावित नहीं कर पाता है जबकि आजादी के दौर में चार पेज का मूल्यनिष्ठ ब्लैक एण्ड व्हाइट समाचारपत्र देश के जनमानस को झकझोर देता था।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ.संजीव भानावत ने कहा

कि मीडिया की शक्ति को संचार माध्यम के द्वारा अभियान का रूप देना होगा। दुर्भाग्य ये है कि मीडिया पाठ्यक्रम की शुरुआत नकारात्मक रिपोर्टिंग के प्रशिक्षण से होती है। जब तक सम्पादकीय मूल्य परिवर्तित नहीं होंगे तब तक मीडिया की वर्तमान भूमिका में बदलाव नहीं आ सकता। संस्कार निर्माण के लिए मीडिया को आगे आना होगा।

कटक से प्रकाशित दैनिक समाज के संपादक गोपाल कृष्ण महापात्रे ने कहा कि व्यवसायिकता और नैतिक दायित्वों के निर्वाहन में सामंजस्य बैठाना होगा। मीडिया में चल रही गलाकाट प्रतिस्पर्धा से समाज का अहित हो रहा है।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.शीलू, मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.शान्तनु आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। शिवम नृत्य कला केन्द्र, इंदौर की कन्याओं ने स्वागत नृत्य एवं आस्ट्रेलिया के ब्र.कु.डेविड ने बांसुरी वादन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इससे पूर्व स्वागत सत्र में अध्यक्षीय संबोधन ब्र.कु.सुंदरी ने दिया। मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.आत्मप्रकाश, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.सुशांत, ब्र.कु.शशि, टाइम्स ऑफ इंडिया जयपुर के न्यूज कोआर्डिनेटर अखिलेश सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। खुले सत्र में मूल्यानुगत मीडिया के राष्ट्रीय संयोजक प्रो.कमल दीक्षित ने 'सांस्कृतिक प्रदूषण पर अंकुश (शेष पेज 11 पर)



ब्र.कु.करुणा



प्रो.कमल दीक्षित



जीवन साहू



गिरिजा शंकर



मधुकर द्विवेदी



अखिलेश सिंह

जीवन गीत बन जाए ...

कहीं मंदिर बन रहा था। तीन श्रमिक वहां धूप में बैठकर पत्थर तोड़ रहे थे। एक राहगीर वहां से गुजर रहा था। उसने बारी-बारी से श्रमिकों से पूछा, 'क्या कर रहे हो?'

एक से पूछा तो वह बोला, 'पत्थर तोड़ रहा हूँ।' उसके बोल में बड़ी पीड़ा थी और स्वर भी भारी था।

दूसरे से पूछा तो वह बोला, 'आजीविका के लिए कमा रहा हूँ।' वह दुखी तो नहीं था लेकिन उसमें भी उदासी कम नहीं थी।

अजनबी तब तीसरे श्रमिक के पास गया। तो वह पत्थर तोड़ते गीत गा रहा था, उसकी आंखों में चमक थी और आनंदमय था। जब उससे भी वही सवाल पूछा तो उसने गीत रोककर कहा, मैं मंदिर निर्माण जैसे महान कार्य में अपना सहयोग दे रहा हूँ। और फिर वह गीत गुनगुनाने लगा।

जादूगर को तुमने देखा होगा, खाली टोकरी से कबूतर निकाल देता है, खाली टोकरी से सांप निकल आता है। लेकिन आप भलीभांति इस सत्यता को जानते हैं कि खाली टोकरी से कबूतर या सांप निकल नहीं सकता, पहले डाला होगा। जो डाला है, वही निकलता है। टोकरी खाली है नहीं, दिखाई पड़ती है। बस उसे देखने में ही सारी कला है। जो डाला है, वह निकाल लिया जाता है।

इस पूरे जीवन को, संसार को, माया कहा है। माया का अर्थ है: इस जीवन में भी तुम जो डालते हो, वही निकल आता है। यह भी जादू का खेल है। और जादू के खेल में तो कोई और तुम्हें धोखा देता है, इस खेल में तुम अपने को ही धोखा देते हो।

जीवन-अपने आपमें कुछ भी नहीं है- कोरा कागज है। जो भी हम उस पर लिखते हैं, जीवन वहीं हो जाता है। जीवन हमारी लिखावट है। हमारी दृष्टि, देखने का ढंग, सोचने की प्रक्रिया जीवन के अर्थ को निर्धारित करती है। जीवन में कोई अर्थ नहीं है, जो हम डालते हैं, वहीं अर्थ उससे निकल आता है। इसलिए किसी ने जीवन को 'माया' कहा है। इस शब्द को समझना-बड़ा कौमती है।

जीवन का अपने में अगर कोई अर्थ होता, तब आदमी स्वतंत्र नहीं हो सकता था। तब आदमी होता परतंत्र, अर्थ से बंधा होता। जीवन में कोई भी अर्थ नहीं है-परम स्वतंत्रता है। आप जो भी अर्थ निकालना चाहें, निकाल सकते हो। सब अर्थ तुम्हारी व्याख्याएं हैं।

नीत्से का बहुत प्रसिद्ध वचन है कि 'जगत में तथ्य कोई भी नहीं है, सभी व्याख्याएं हैं।' फूल देखकर तुम कहते हो: 'सुन्दर है' यह तथ्य है या व्याख्या है? तुम कहते हो: 'फूल सुंदर है तुम्हारे पास ही कोई खड़ा है, उसे फूल दिखाई ही नहीं पड़ता है। सौंदर्य का उसे पता ही नहीं चलता। तुम जब फूल को सुंदर कहते हो, तब वह भी सुन लेता है- बहरे की भांति। और अगर कोई भी जमीन पर न हो, तो फूल सुंदर होगा या नहीं? कोई भी जमीन पर न हो तो फूल होगा, लेकिन न सुंदर होगा, न कुरूप होगा। 'होना' खाली रह जायेगा। 'होना कोरा कागज है। अर्थ तुम लिखते हो। सब अर्थ तुम्हारे हस्ताक्षर हैं। इस बात की हमें ठीक से समझ लेना चाहिए, क्योंकि इस पर बहुत कुछ निर्भर है।

पश्चिम में आधुनिक युग के करीब-करीब सभी विचारक एक बात से बहुत पीड़ित हैं, और वह है कि 'जीवन अर्थहीन- मीनिंगलेस मालूम होता है। और अगर खोज में लगते और जितना ही तुम खोजते हो, उतना ही तुम पाते हो कि कोई अर्थ नहीं है।

खोजनेवाले सभी जीवन में अर्थ नहीं पायेगा, अर्थ है नहीं वहां। अर्थ डालना पड़ता है- खोजना नहीं पड़ता। अगर तुम रोना चाहते हो, तो ऐसा अर्थ डालो कि जीवन उदासी बन जाये। अगर तुम हंसना चाहते हो, तो ऐसा अर्थ डालो कि जीवन हंसी बन जाये। और अगर तुम मुक्त होना चाहते हो, तो जीवन में अर्थ डालो ही मत तुम अर्थ हीनता से राजी हो जाओ।

वह चौथी बात इस कथा में नहीं है। कथा में चौथी बात आ ही नहीं सकती। तीन बातों इस कथा में हैं, उन्हें हम समझेंगे। चौथी इसमें नहीं है। चौथी कुछ ऐसी है कि कथा में डालना कठिन है।

तीनों मजदूर हैं। धूप एक जैसी है, दोपहर एक जैसी है। तीनों ही पत्थर तोड़ते हैं, पत्थर तोड़ना भी एक जैसा है। (शेष पेज 4 पर)

प्राप्तियों का आधार है -देही अभिमानी स्थिति

हमारी कमाई का आधार है -देही अभिमानी स्थिति। एक 'मैं' शब्द से ही ऊपर चढ़ते, उसी 'मैं' शब्द से ही नीचे आते। शब्द मैं है परन्तु उसी घड़ी महसूस होता है कि यह मैं ऊपर ले जाता है या नीचे ले आ रहा है। कहते हैं मुझे जहाँ से मदद मिली, उसका शुक्रिया माने तो क्या दर्जा है? लेकिन समय पर मदद मिली तो भी अंदर से बाप की महिमा निकले। दिल से बाबा की महिमा निकले। भक्ति में भी कोई हॉस्पिटल खोलता है तो रिटर्न बाबा देता है, जो आत्मा जो सेवा करती है, उसे भगवान देता है। बीच में मैं अगर देना चाहती हूँ तो भगवान से वंचित करती हूँ, यह पाप करती हूँ। मैं कुछ रिटर्न देती हूँ, तो उसको आता यह कुछ भरे लिए करता है। यह हिसाब-किताब जोड़ रहे हैं। मैं दूँ फिर वह दे। मुझे तो चुकतू करना है ना। अपनी ऐसी नेचर होनी चाहिए जो कोई कांटा भी निकाले तो फौरन थैंक्स निकले। ऐसे नहीं कोई कितना भी करे हम थैंक्स भी न दे। यह सभ्यता नहीं। लेकिन उनके ही गुण गाती रहूँ, यह नहीं। गुण क्यों गाऊँ। उसे भाग्य बनाने का चांस मिला। रिटर्न में उसे खुशी आई। मैं सदा खुश रहने वाली नहीं तो मैं उसे खुशी कैसे दूँगी। बाबा सभी बच्चों को प्रत्यक्षफल खुशी देता है। मैं शुभचिन्तक हूँ तो बाबा को देने दूँ। बाबा जो देगा मैं नहीं दे सकती। हर आत्मा का ध्यान बाबा में हो यही हमारी सेवा है। बाबा का सिकीलधा लाडला बच्चा बनकर पूरा वर्सा लें। मेरा लाडला नहीं। हमारी भावना अनासक्त हो, अपनी कोई आसक्ति न हो। यह हमारी

युद्ध बड़ी सूक्ष्म होती जा रही है। भगवान के साथ हमारा संवाद सूक्ष्म होता जाता है। सेकण्ड में बाबा सामने आता तो टच हो जाता यह बात ठीक है या नहीं है।

मैं बाबा से संकल्प में भी ज्यादा बात नहीं करती। निमित्त मात्र सेवा अर्थ वा स्व प्रति संकल्प उठा, तुरंत बाबा से रिटर्न जवाब मिल जाता है। हम मन में ज्यादा ख्याल क्यों चलायें। हम भी वरदानी हैं। कोई समय था ज्यादा विचार चलता था, अभी नहीं। जो होने वाला है सो होगा, तुम अच्छी तरह से सोच समझ हर काम करते चलो। तो फिर बाबा तुम्हारा साथी है। यह अंदर से गुप्त पुरुषार्थ हो, इसी में मजा है। सेवा एक्स्ट्रेट टाइम पर अच्छी तरह से करनी है, फिकर अफसोस करने की बात ही नहीं। दुख शोक से पार हो गये। बाकी थोड़ी फिकर है, थोड़ा अफसोस होता है यह भी न हो। ऐसी अवस्था अंदर से जमाते चलो। एकरस अवस्था होगी तो बाबा के साथ का अनुभव होगा।

बाबा के बच्चे अभी इतने खबरदार होशियार हो गये हैं जो इतना माया को चांस नहीं दे रहे हैं। थोड़ा भी मर्यादा की लकीर से बाहर जाते तो माया शोक वाटिका में लेकर जाती है। जब हम अलबेले होते हैं, मर्यादाओं में ढीले होते हैं या सुस्ती बार करती है तो माया का चांस मिल जाता है। तो सदा अटेंशन रखना है।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका



ब्र. कु. गंगाधर



दादी इन्दरमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

गुणग्राही बनो तथा गुणों का ही वर्णन करो

प्रश्न -दादीजी, सदा निर्विघ्न रहने का सहज पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर -देखो, सभी से गलती होती है तो उसे भी क्षमा करें। प्यार से किसी को समझाओ तो वह समझ जाते हैं। प्यार से न सुनने वाला भी सुनने लगेगा। जब हम छोटे थे बाबा हमें हर मास के लिए टॉपिक देता था कि इस मास में यह परिवर्तन करना है जो हम करते रहे। विस्तार को सार में लाना - यही निर्विघ्न बनने का सहज पुरुषार्थ है।

प्रश्न -संगठन को निर्विघ्न कैसे बनाएं?

उत्तर -किसी की गलती को बड़ाओ नहीं क्योंकि जिसे सुनाओगे वह दूसरे को सुनायेगा जिससे उसकी खुशबू वायुमण्डल में फैलेगी। अगर गलती करने वाला बाबा का बना है तो कुछ तो उसमें है-उम्मीद सबमें रखनी है। हरेक को प्यार से बदलना है। हरेक के अंदर गुणों को देखने का एवं शुद्ध भावना, शुद्ध परिवर्तन का चश्मा पहनो तो वह भी बदल जायेगा।

प्रश्न -हम सेवा करते हुए एक दूसरे के साथ हल्के रहें उसकी विधि क्या है?

उत्तर -एक दूसरे के प्रति दोनों मिलकर संकल्प करो कि हम एक होकर दिखायेंगे। एक दूसरे के साथी बन जाओ, एक दूसरे को समझने की कोशिश करें और एक-दूसरे को रोस्पेक्ट से देखें।

प्रश्न -कभी-कभी उमंग-उत्साह कम हो जाता है और आलस्य-अलबेलापन का रूप ले लेता है, उसका कारण क्या है?

उत्तर -उमंग-उत्साह वाले भी सेंटर पर कोई न कोई होते हैं, उनके संग रूहरिहान करो। तो आपमें भी परिवर्तन आ जायेगा। उसकी विशेषता धारण करो, उसका विशेष गुण उठा लो। जब दूसरों को देखते हैं तो अलबेलापन आता है।

प्रश्न -बिना कारण के खुशी गुम क्यों होती है?

उत्तर -मन में व्यर्थ संकल्प हैं। अगर किसी की बात दिल में चुभ जाती है तो व्यर्थ चलता है। बाबा ने कहा कि शुभ सोचना, लेकिन फिर भी बुद्धि व्यर्थ तरफ चली जाती है, उसके लिए अपनी कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ। योग के बाद सोचो कि बाबा ने हमारे जीवन के लिए कौन सी बातें कही हैं? संतुष्टमणि बन जाओ और दूसरों को संतुष्ट करो। दूसरे को चेंज करने से पहले अपने आपको चेंज करो। शुभभावना बहुत काम करती है जो नहीं बदलता उसे वायब्रेशन्स से

ठीक करो। बाबा हमें यही पाठ पढ़ाता था कि गुणग्राही बनो, गुणों का ही वर्णन करो। कैसा भी है, बाबा का तो बना है ना! कुछ तो विशेषता उसके अंदर है ना। यह शुभभावना रखो। यह बदलेगा ही नहीं यह सोचकर उसकी तकदीर को लकीर नहीं लगाओ। मम्मा ने हरेक को बदला। मम्मा ने बहुत मेहनत की। मम्मा ने अच्छे-अच्छे सेम्पल बनाये। मम्मा सबसे प्यार से चलती थी। मम्मा को देखकर मम्मा जैसा बनने का उमंग आता था। दिलशिकस्त नहीं होते थे कि हम ऐसा बन ही नहीं सकते। मनुष्य चाहे तो क्या नहीं बन सकता। बाबा ने कहा और मैंने किया। बाबा की मुरली का महत्व रखकर हमें करना ही है।

प्रश्न -पुराना संस्कार इमर्ज हो जाता है तो क्या करें?

उत्तर -वह ड्रामा में हमारा पेपर होता है जिससे पता पड़ता है कि हमारा फाउण्डेशन कच्चा है। अगर पुरुषार्थ में फर्क पड़ता है तो उसकी पीठ कर परिवर्तन करें, अपने ऊपर ध्यान दें। बाबा से प्यार सबका है। उस समय बाबा के प्यार को याद करो बातों को याद नहीं करो। अपने दिल में बाबा को बिठा लो तो भरी हुई दिल में और कोई बैठ नहीं सकता। दिल में बाबा बैठा है तो हम अकेले नहीं हैं, उल्टा कर्म नहीं होगा।

प्रश्न -सेवा के क्षेत्र में अगर कोई हमारे जैसा करने की रीस करता है तो उस समय क्या करें?

उत्तर -दिल में जब सदा शिव बाबा को बिठा ही दिया तो यह सब नहीं होगा, जिसकी दिल अच्छी होगी भले ही उसका सेंटर छोटा ही क्यों न हो बार-बार मन होगा उसके पास जाने का।

प्रश्न -बाबा की दिलपसंद सेवा क्या है? बाबा सेवा के क्षेत्र में किन-किन बातों को देखते हैं?

उत्तर -बाबा देखते सेवा करते समय कोई मिलावट तो नहीं, अगर नाम कमाने के लिए सेवा करते तो वह सेवा बाबा को पसंद नहीं आती। बाबा देखता दिल में क्या रखकर सेवा की - सेवा भाव या लालच भाव। सच्ची दिल से सेवा करने वालों पर ही साहेब राजी होता है। जिस भाव से सेवा करते उसका वायब्रेशन जिज्ञासुओं को भी आता है, थोड़े समय के लिए वह भी उमंग-उत्साह से सहयोगी बनेगा लेकिन बाद में धोखा देगा।

प्रश्न -दादीजी, बाबा के दिल में हम कैसे बैठें?

उत्तर -बाबा को दिल में बिठाया तो हम भी तो उनके दिल में ही जाएंगे। बाबा का दिल हमसे खुश रहेगा तो हम भी बाबा के दिल में बैठेंगे क्योंकि कोई से दिल खुश नहीं होती तो क्या करते हैं-कहते हैं इसको निकालो। तो बाबा की दिल हमसे खुश हो तब बाबा के दिल में बैठेंगे।

जो आत्मिक ज्ञान दे वही श्रेष्ठ विश्वविद्यालय

ज्ञानसरोवर। वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति डॉ विनय कुमार पाठक ने ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग द्वारा 'स्वर्णिम संसार के लिए दिव्य बुद्धि' विषय पर महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के अध्यापकों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि शब्द की तुलना में मौन अधिक कारगर होते हैं। हमें मैं के अहंकार से परे होना चाहिए। हम न तो अपने प्रथम श्वास को रोक सकते हैं और न ही अपने अंतिम श्वास से आगे की यात्रा कर सकते हैं। मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा महान शिक्षा है। हम भी अपने विश्वविद्यालय में इसका केंद्र स्थापित करेंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि भारत भूमि देवी देवताओं की कर्मभूमि रही है। जब आदि सनातन देवी देवता धर्म था तब झूठ का नामोनिशान नहीं था। सत्यता पर चलने



वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति डॉ विनय कुमार पाठक, दादी रतनमोहिनी, सोलन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रेम कुमार खोसला, ब्र.कु.मृत्युंजय तथा अन्य दीप प्रज्वलित करते हुए।

से ही अब स्वर्णिम युग आएगा। परमात्मा गुप्त रूप से उस स्वर्णिम युग की स्थापना करा रहे हैं। राजयोग से जीवन सुखमय एवं शांतिपूर्ण बनता है। सोलन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रेम कुमार खोसला ने कहा कि पश्चिमी शिक्षा की वजह से सांस्कृतिक व्यवस्था की समाप्ति का खतरा उभर

आया है। माताएं बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दे पा रही हैं। आत्मा एवं शरीर का ज्ञान देने वाला यह विश्वविद्यालय नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय के समान है। मन को भटकने से रोकने के लिए यही शिक्षा कारगर है। आध्यात्मिक शिक्षा के बिना हम देश को कैसे बचा पाएंगे।

प्राचीन काल से भारत की प्रतिष्ठा इसके योग व अध्यात्म की वजह से रही है। वैचारिक शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। मैं भी अपने विश्वविद्यालय में मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने हेतु ब्रह्माकुमारीज से अनुरोध करता हूँ।

ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के

उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय ने दोनों विश्वविद्यालयों में मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करने का विश्वास दिलाया। मनुष्य को देवता समान बनने की शिक्षा प्रदान कर सके, वही सही मायनों में विश्वविद्यालय माना जा सकता है।

प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ हरीश शुक्ला ने कहा कि यह ज्ञान जीवन में देवी बदलाव लाने वाला है। मैंने अपने बच्चों के बदलते आध्यात्मिक जीवन से प्रभावित होकर इस ज्ञान को गहराई से आत्मसात करने की सोची। मेरे बच्चे ही मेरे आध्यात्मिक गुरु बने। स्वयं परमात्मा धरा पर आकर यह ज्ञान सुना रहे हैं- इस बात की अनुभूति में मुझे वक्त तो लगा मगर मैं इस सत्य को जान गया।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.शीला ने कहा कि राजयोग के द्वारा हम मात्र अपने मन पर ही विजय प्राप्त नहीं करते बल्कि विश्व की आत्माओं के हृदयों को भी जीत सकते हैं। ब्र.कु.सुमन ने मंच का संचालन किया।

सातपुडा पर्वतों से प्रवाहित होगी आध्यात्मिक ज्ञान धारा



जिला परिषद सदस्य हरसिंग, तहसीलदार बीरबल वळवी, विजय पराडके, ब्र.कु.गंगाधर, ब्र.कु.पारू, ब्र.कु.विद्या, ब्र.कु.शीला, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.दिलीप दीप प्रज्वलित करते हुए।

धडगांव। नंदूरबार जिले के सातपुडा पर्वतीय श्रृंखला में बसे आदिवासी क्षेत्र धडगांव में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के नये भवन का उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन दुर्गम रास्ते को पार कर, कठिन परिस्थितियों में इस ऊँची पहाड़ी पर स्थिति गांव में पिछले चार वर्षों से सेवारत ब्र.कु.सरला कहा कि यहां के भोले भाले लोगों में ज्ञान व योग का संचार करने के लिए इस नये सेवाकेन्द्र का निर्माण हुआ है। इस गांव की बेटी ब्र.कु. गंगा ने भी आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा पवित्र श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा ली और अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित करने का संकल्प किया है। यहां

के आदिवासी भाई-बहनों में ज्ञान की अलख जगाने का कार्य शिवपिता ने सातपुडा पर्वत से शुरू कर दिया है।

उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ओमशांति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर ने कहा कि सातपुडा पर्वतों के मध्य स्थित यह आध्यात्मिक सेवास्थान चारों ओर ज्ञान के प्रकाश को फैलायेगा तथा लोगों को श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देगा। राजयोग से मन की शांति व जीवन जीने की कला आती है इसलिए यहाँ की जनता को इसका लाभ उठाना चाहिए। महाराष्ट्र की धरनी से अनेक महापुरुषों व संतों का जन्म हुआ है। यहाँ से भी आध्यात्मिक चेतना से सम्पन्न

अनेक भाई-बहनों तैयार होंगे।

पुणे से पधारी ब्र.कु.पारू बहन ने कहा कि यहाँ इतनी मुश्किलताओं में, दुर्गम पहाड़ी में सेवा करना कठिन व चुनौतिपूर्ण है परंतु एक छोटी सी मेरी साथी ब्र.कु.सरला बहन ने यह कार्य करके दिखाया है। मैं शुभकामना देती हूँ कि यहाँ की सेवा दिन दूनी रात चौगुणा बढ़ती रहे। सभी ग्रामवासी शराब, बीड़ी व तंबाकू से मुक्त होकर सात्विक व हेल्दी रहें।

जिला परिषद सदस्य हरसिंग दादा ने कहा कि यहां की जनता भावना प्रदान है और सरला बहन ने जो ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार यहां पर किया है वह प्रशंसनीय व गायन योग्य है। यहाँ की जनता के लिए सौभाग्य की बात है। यह ईश्वरीय ज्ञान सदा चलता रहे और लोगों में सकारात्मक बदलाव आये।

तहसीलदार बीरबल वळवी ने कहा कि मुझे विश्वास है कि यह ईश्वरीय ज्ञान लोगों तक पहुँचाने के लिए मेरे योग्य जो भी सेवा हो मैं दिल से सहयोग देने के लिए अपना सौभाग्य समझता हूँ। इस अवसर पर सभी का स्वागत ब्र.कु. सरला बहन ने किया।

माउण्टआबू से पधारे ओमशांति मीडिया के सीनियर डाटा मैनेजर ब्र.कु. दिलीप भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. विद्या बहन ने भी अपनी शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर जी.प. सदस्य श्री.विजयसिंग पराडके, श्री. दिलीप पाटील भी मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.भारती ने सुचारु रूप से किया।

आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध बनाता है राजयोग

पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह की निदेशिका श्रीमती किरण चोपड़ा ज्ञानसरोवर में दो दिवसीय प्रवास के बाद महसूस करती हैं कि राजयोग ने केवल आत्मा और परमात्मा के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम है बल्कि इससे नैतिक शिक्षा का विकास और चरित्र निर्माण भी होता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को ईश्वरीय अलौकिक केन्द्र मानते

लगता है मानो स्वर्ग को साक्षात् धरती पर उतार दिया गया है। सफेद वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारियां स्वच्छ वस्त्रों के अलावा चिन्ता रहित चेहरे पर फैली हल्की सी मुस्कान से इतना प्रभावित करती हैं कि यहाँ बस जाने को मन करता है। परमात्म याद में बनाया जाने वाला भोजन भी सात्विकता का अनुभव कराता है। संस्था के परिसरों को देखकर सहज ही विश्वास हो जाता है कि स्त्री



हुए वह कहती हैं कि इस संस्था का मुख्य उद्देश्य विशुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करना है। यहाँ कर्मों को सुधारने पर बल दिया जाता है। समाज व मानव मात्र की सेवा तथा जीवन में सहनशीलता को आधार बनाने का पाठ पढ़ाया जाता है।

आबू पर्वत को अत्यंत आकर्षक एवं सुंदर स्थान बताते हुए श्रीमती चोपड़ा अपने अनुभव सांझे करते हुए कहती हैं कि ज्ञानसरोवर देखने के बाद ऐसा

चाहे तो न केवल परिवार बल्कि समाज और देश को भी बदल सकती है। इस विश्वविद्यालय का संचालन कर रही बहनों का प्रबंधन, संस्कार, आध्यात्मिक ज्ञान और सद्व्यवहार प्रत्येक अतिथि में नयी उर्जा का संचार करता है। इस संस्था की नींव सच्चाई और शुद्धता पर खड़ी है। मनोहारी व प्राकृतिक सौंदर्य समेटे इस विश्वविद्यालय की यात्रा के दौरान स्त्री सशक्तिकरण की सार्थकता का सहज ही आभास हो जाता है।



शांतिवन। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में आए हुए बच्चों को ज्ञान की मीठी बातें सुनाते हुए ब्र.कु.निर्वैर।

जीवन गीत..

लेकिन तीनों की दृष्टियां अलग-अलग हैं। एक से पूछे जाने पर उसने उदासी और दुख से कहा: 'पत्थर तोड़ रहा हूँ।' इसमें क्रोध भी रहा होगा। यह उदासी आक्रामक है। यह बड़े बे-मन से तोड़ रहा है। यह बड़ी मजबूरी में तोड़ रहा है। यह बड़ी गुलामी में तोड़ रहा है। तोड़ना पड़ रहा है, इससे बहुत पीड़ित है। यह एक जबरदस्ती है। जैसे कोई कारागृह में पत्थर तोड़ रहा हो। पत्थर तोड़ने पड़ रहे हैं, तोड़ने की कोई आकांक्षा, कोई इच्छा, कोई रस नहीं है। इसीलिए जिसने पूछा, उस पर यह क्रोधित भी हुआ। उसने कहा: 'पत्थर तोड़ रहा हूँ। शायद कहा हो कि दिखाई नहीं पड़ता? अंधे हो? साफ है कि पत्थर तोड़ रहा हूँ। इसमें और क्या पूछने की बात है?

उदासी के दो ढंग हैं। एक उदासी का पॉजिटिव-विधायक ढंग है, तब उदासी क्रोध बन जाती है। और एक उदासी का निगेटिव, पैसिव, निष्क्रिय ढंग है, तब उदासी केवल बोझिलता होती है— एक उपेक्षा, एक निष्क्रियता। तब उससे क्रोध नहीं निकलता, तब सिर्फ शिथिलता छा जाती है।

क्रोध उदासी का आक्रामक रूप है और उदासी क्रोध का अनाक्रमक रूप है। जो लोग हमला कर सकते हैं, वे क्रोध करते हैं, जो लोग हमला नहीं कर सकते हैं, वे रोते हैं, उदास होते हैं।

दूसरे मजदूर की उदासी अनाक्रमक है। उसने यह नहीं कहा कि पत्थर तोड़ रहा हूँ, अंधे हो, दिखाई नहीं पड़ता? उसने कहा: 'आजीविका कमा रहा हूँ।' मजबूरी में वह भी है। लेकिन मजबूरी जैसे किसी और ने नहीं थोपी है, अपने हाथ से चुनी है। कारागृह में वह भी है, लेकिन किसी ने धक्के देकर कारागृह में नहीं डाला है। खुद ही चला आया है। आजीविका तो कमानी ही होगी। रोजी-रोटी तो कमानी ही होगी। बच्चे हैं, पत्नी है। अपने हाथ से जो जाल खड़ा किया है, उसका कर्तव्य तो निभाना ही होगा। और तीसरे मजदूर ने अपने गीत की गुनगुनाहट को भी पत्थर तोड़ रहा है।

बाहर के तथ्य में कोई भेद नहीं है। रती भर अंतर नहीं है। धूप एक-सी है। पत्थर तोड़ने का श्रम एक-सा है। तीनों का पसीना बह रहा है। लेकिन पहला आक्रामक रूप से दुखी है। दूसरा अनाक्रमक रूप से उदास है।

तीसरा प्रफुल्लित है। वह पत्थर नहीं तोड़ रहा है, मंदिर बना रहा है। उसका कृत्य किसी विराट कृत्य से जुड़ा हुआ है। वह कोई छोटा काम नहीं कर रहा है। एक विराट मंदिर बन रहा है, उसका भागीदार है, उसका निर्माता है, उसका सृष्टा है। उसके पत्थरों के बिना यह मंदिर बन न सकेगा। उसका हाथ इस मंदिर के बनने में है।

तीसरा प्रफुल्लित है, क्योंकि अपने से बड़ी किसी चीज से जुड़ा है। तीसरा खुश है, आनंदित है, क्योंकि कुछ सार्थक काम हो रहा है।

रोटी कमानी कोई बड़ी सार्थकता नहीं है। तुम जीवन में सी में से नित्यानबे लोगों को उदास देख रहे हो, क्योंकि वे सब रोटी-रोजी कमा रहे हैं। जाते हैं दफ्तर, दुकान, काम करते हैं, वे तो रोटी-रोजी कमा रहे हैं। रोटी-रोजी कमाने वाला चित्त बहुत प्रसन्न नहीं हो सकता है। भरना है पेट किसी तरह, चाहते थे कि अगर पेट न होता तो अच्छा। राह देखते हैं कि मर जायें तो छुटकारा मिले।

दो दुकानदार साड़ीदार थे। धंधा बुरा जा रहा था। और धंधा वस्तुतः कभी भी अच्छा नहीं जाता। क्योंकि आकांक्षाएं सदा ज्यादा हैं। सभी व्यवसाय पीछे छूट जाते हैं। कमाई सदा कम होती है—वासना से। धंधे सदा ही बुरे जाते हैं। कितना ही कमाओ, 'पेट' भरता नहीं है। पेट के भरने का कोई उपाय नहीं है।

तो दोनों रोना रो रहे थे कि धंधा बुरा जा रहा है। ग्राहक दिखाई नहीं पड़ते। और एक तो इतना उदास था कि उसने कहा, 'इससे अच्छा था कि मैं पैदा ही नहीं होता। यह जिंदगी होती ही न, तो अच्छा था। बेहतर था, मैं पैदा ही न होता। किस दुर्भाग्य के क्षण में मैं पैदा हुआ!

दूसरे आदमी ने कहा: 'छोड़ो भी, ऐसा भाग्य किसको मिलता है। ऐसा सौभाग्य बहुत कम लोगों का होता है कि वे पैदा ही न हों। यह होता ही

किसका है? यह बात ही नहीं उठाओ। इतना भाग्यशाली कौन है - कि पैदा ही न हो! यह तो बड़े सौभाग्य की घटना है।

पैदा होना होगा, दुर्भाग्य शुरू हो गया। पेट भरना ही होगा। रोटी-रोजी कमानी ही होगी। काम करना ही होगा। चित्त उदास होता है, क्योंकि तुम जो कर रहे हो, वह इतना छोटा मालूम पड़ता है। और कर-करके भी उससे कोई अर्थ, कोई निष्पत्ति तो निकलती नहीं, कोई सार तो निकलता नहीं।

रोज उठोगे, दफ्तर जाओगे, लौट आओगे। रोज फिर उठोगे, फिर दफ्तर जाओगे, फिर लौट आओगे। जीवन एक बंधा हुई लिंक हो जाता है। जैसे मालगाड़ी के डब्बे शंटिंग करते रहते हैं - अर्थहीन, ऐसा ही जीवन है। दुकान-बाजार-घर-बाजार: शंटिंग होती रहती है। एक दिन तुम मर जाते हो, कहीं कोई मंजिल उपलब्ध नहीं होती!

तीसरे मजदूर ने कहा: मंदिर बना रहा हूँ।' इसके कृत्य में एक सार्थकता है। वह तो मिट जायेगा, लेकिन मंदिर रहेगा। वह तो नहीं रहेगा, लेकिन उसका कृत्य बचेगा। समय की धारा में खुद तो खो जायेगा, लेकिन वह कुछ बना जा रहा है, जो बड़ा स्थायी है, हजारों लोग पूजा करेंगे।

जिन लोगों के जीवन में भी तुम्हें प्रफुल्लता दिखाई पड़ती हो, तुम फौरन समझ जाना कि वे कोई मंदिर बना रहे हैं। चाहे वह मंदिर सच हो कि झूठ, यह सवाल नहीं है। कौन-सा मंदिर सच है।

लेकिन जिस आदमी को भी तुम प्रसन्न देखो, प्रफुल्ल देखो, समझ लेना कि वह कोई मंदिर बना रहा है। वह किसी ऐसे कृत्य में लगा है, जो उससे बड़ा है। राष्ट्र की सेवा कर रहा है, कि समाजवाद ला रहा है, कि स्वतंत्रता का अभियान चला रहा है, कि शहीद होने की तैयारी किये बैठा है, कि गरीबी मिटाकर रहेगा। तुम पाओगे कि उसकी आंखों में एक चमक है, एक प्रफुल्लता है। जीवन जीना है। माना ऊंचाईयों के शिखर अर्जित करना तो हो ही साथ में खुशी व उमंग की चमक लिए हो।

प्रसन्नता का रस जीवन में अंगीकार हो। जीवन में लिखावट हो जो गीत बन जाए न कि रुदन रोना हो। यह स्वतंत्रता आपके हाथ में है।

व्यर्थ में समय गंवाना माना आंतरिक ऊर्जा गंवाना

प्रश्न:- अधिकांश समय हमारा ध्यान अपने पड़ोसी या दूसरों पर रहता है कि वह क्या कर रहा है? स्वयं के बारे में सोचने की आदत कैसे डालें?

उत्तर:- हमें इसके लिए स्वयं को देखना होगा, जब तक हम स्वयं को नहीं देखेंगे तब तक हमें पता भी नहीं चलेगा कि हम कितना ज्यादा गलतियां करते हैं। हमारा एक-एक विचार व्यर्थ गंवाना माना आंतरिक ऊर्जा की बर्बादी करना है। मैं कितना भी बैठकर औरों के बारे में सोचती रहूँ इससे कोई फायदा होने वाला नहीं है क्योंकि औरों को मेरे हिसाब से तो चलना है नहीं। अगर यही ऊर्जा हम अपने बारे में सोचने में लगा दें तो हम कुछ खास करने में सक्षम हो जायेंगे।

अब जैसे ही हम निर्णायक होने लगते हैं तो इससे निराशा उत्पन्न होती है। मान लो कोई सीनियर है जो अपने जूनियर को बार-बार कोई बात बोल रहा है लेकिन वो मानता ही नहीं है और अपने हिसाब से ही कर रहा है तो अब क्या होगा? इससे निराशा भी होगा और गुस्सा भी आयेगा। जिससे हम आपसे बाहर हो जाते हैं माना हम अपनी धैर्यता की सीमा को तोड़ देते हैं। क्योंकि व्यक्ति को जब क्रोध आता है तो वह न कुछ सही सोच सकता है और न ही कोई सही निर्णय ले पाता है। माना उसकी स्थिति थोड़ी देर के लिए पागलों जैसी हो जाती है। अब ऐसा सीन क्यों उत्पन्न हुआ? क्योंकि आप आपसे बाहर चले गये। पहली बात तो उस संवेदना ने आपको अपने प्रभाव में ले लिया, जिसके कारण आप अपनी क्रियाशीलता करने में सक्षम नहीं रहें।

स्वयं को देखने से मुझे ये समझ में आयेगा कि मेरे लिए क्या सही है और क्या गलत। दूसरों को देखना बहुत आसान है एक दिन आप स्वयं को देखो तो आपको पता चलेगा कि ये कितना आसान है। कोई दूसरा व्यक्ति आपको देखकर बता सकता है कि आपके लिए क्या सही है और क्या गलत है? लेकिन हम दोनों एक दूसरे को बदल तो नहीं सकते। लेकिन दोनों अगर अपने आपको देखना शुरू करे उतने ही समय में कि मेरे लिए क्या सही है, तो आपको बहुत आश्चर्य

होगा!

ब्रह्माकुमारीज् में हमें ये सिखाया जाता है कि 'जब हम बदलेंगे तो जग बदलेगा' हमारा स्लोगन है 'आत्म परिवर्तन से विश्व परिवर्तन'। इससे एक तो हम बदलें फिर हमारा देखने का दृष्टिकोण बदला तो हमारे लिए सारा संसार ही बदल गया। इससे एक फायदा और है कि यदि हम एक-एक बदलते गये तो विश्व परिवर्तन तो अपने आप ही हो जायेगा। स्वयं को बदलने की यह सबसे सरल विधि है। लेकिन हमने इसे कठिन बना दिया कि पहले आप बदले तब मैं बदलूंगा।

प्रश्न:- हमारी निर्भरता अगर



- ब्र.कु.शिवानी

दूसरों पर रहती है तो हमारा दृष्टिकोण भी तो उनसे प्रभावित होगा ना?

उत्तर:- क्योंकि हमारी जागरूकता बाहर थी। दूसरी चीज जो बहुत बड़ा बहाव बनता है हमारी खुशी के लिए वो है 'हमारी दूसरों से अपेक्षा'। क्योंकि हमने लोगों से बहुत सारी अपेक्षाएँ बनाकर रखी है। जब लोग हमारी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरते हैं तो हमारी खुशी का स्तर नीचे चला जाता है। मान लो आज बस समय पर नहीं आयी, मेरी अपेक्षा थी कि बस रोज सुबह आठ बजे आती है, तो आनी चाहिए। जैसे ही वो समय पर नहीं आयी तो मेरा खुशी का स्तर एकदम से गिर जाता है। इसी तरह से हम चेक करें कि हम जीवन में किन-किन लोगों से अपेक्षाएँ बनाये हुए हैं तो आप पायेंगे हमने अपने संबंधों में भी लोगों से अपेक्षा बनाये हुए हैं।



आर.के.पुरम (दिल्ली)। ट्री प्लांटेशन कार्यक्रम में ब्र.कु.ज्योति, ब्र.कु.अनिता तथा अन्य।

भीतर के पट खोल तोहे पीय मिलेंगे

भक्ति मार्ग में कहते हैं - "रे मन, राम सिमर। राम सिमर बाँवरे। अरे बन्धु, पता नहीं कब यह प्राण पखेरू हो जायेंगे, तू राम सिमर ले। उठ राम सिमर ले।" दूसरे कई भक्त कहते हैं - "हरि बोल, मनुआ मोरे, हरि बोल ! तेरा क्या लगेगा मोल ? तू हरि-हरि बोल। तू गफलत मत कर रे, हरि-हरि बोल।" कई कहते हैं - "तू मुख से कछु न बोल, तू भीतर के पट खोल। भीतर के पट खोल रे प्राणी, तोहे पीय मिलेंगे।" कई कहते हैं - "तोल सके तो तोल, बाबा, मन की आँखें खोल। हीरा जन्म अनमोल, तू मन की आँखें खोल।"

इस प्रकार, कोई हरि बोलने को कहता है, कोई राम, कोई चुप साधने को कहता है और कोई हरि-भजन करने को, परन्तु एक बात तो भक्त और ज्ञानी सभी कहते हैं कि भगवान को याद कर लो। काल सिर पर मँडरा रहा है और पता नहीं कि कब किसकी बारी आ जाय और सब यहीं धरा रह जाय।

हाँ, भक्त यह तो नहीं जानते कि 'राम, कौन है और सत्य सार में 'राम-कहानी, क्या है। उनके पास वह ज्ञान-अंजन भी नहीं है जिससे मन का तीसरा नेत्र खुल जाय। परन्तु इतना तो वे ठीक ही कहते हैं कि - "उठ ! गफलत मत कर रे, हरि को याद कर ले पता नाहिं है यह प्राण कब माटी के इस पिंजरे से पखेरू हो जायेंगे।" वे यह भी ठीक कहते हैं कि - 'यह दुनिया रैन-बसेरा है' न यह घर तेरा है न मेरा है। यह जन्म-जन्म का फेरा है। अब होने वाला सबेरा है, फिर भी तू कर्म कर रहा टेढ़ा है। अरे उठ भाई, काहे को किया बखेरा है। अरे अब जाग मुसाफिर, भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है और फिर रोवत है क्योंकि काल चिड़िया जब चुग जीवन रूपी खेत गयी तब तू जाट खड़ा पछतावत है।,

हाँ, भक्त यह तो नहीं जानते कि अब जो सबेरा होने वाला है, उसमें क्या होगा और वे यह भी नहीं जानते कि यह मुसाफिर आया कहाँ से है और इसे जाना कहाँ है। जिन्हें अब ज्ञान मिला है, उन्हें ही अब यह पता है कि कैसे यह दुनिया मुसाफिरखाना है और उसे दूर, कहाँ दूर जाना है और अब यह

देश हुआ बेगाना है। तब फिर क्यों करता बहाना है? आखिर मन में क्या ठाना है?

जब राम अपना काज करके चले जाएंगे तब राम नाम धन कहाँ से मिलेगा? तब विकर्मों का रावण कैसे जलेगा? माया मारीच तब कैसे टलेगा? अतः अरे ज्ञानी भाई, 'बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत। काल चिड़िया चुग रही जीवन रूपी खेत।' यह उक्ति जीवन के



जब राम अपना काज करके चले जाएंगे तब राम नाम धन कहाँ से मिलेगा? तब विकर्मों का रावण कैसे जलेगा? माया मारीच तब कैसे टलेगा? अतः अरे ज्ञानी भाई, 'बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत। काल चिड़िया चुग रही जीवन रूपी खेत।' यह उक्ति जीवन के इस अवसर पर घटती है। परन्तु कोई-कोई ज्ञानी करता क्या है, इस कान से सुनता है और उस कान से निकाल देता है और करवट बदल कर फिर सो जाता है।

इस अवसर पर घटती है। परन्तु कोई-कोई ज्ञानी करता क्या है, इस कान से सुनता है और उस कान से निकाल देता है और करवट बदल कर फिर सो जाता है। भक्ति मार्ग में 'सिमरण' कहा जाता है परन्तु ज्ञान-मार्ग में 'स्मृति'। वास्तव में 'स्मृति' ही से दृष्टि, वृत्ति, स्थिति और कृति बदलती है और नैतिकता तथा आध्यात्मिकता शक्तिशाली होती है। अतः बारम्बार

ईश्वरीय स्मृति ही को धारण करने के लिए निर्देश अथवा उपदेश दिया जाता है परन्तु मनुष्य को विस्मृति का चिरकाल से अभ्यास हो चुका है। वह बार-बार आत्मा के स्वरूप को भूल कर तथा परमपिता परमात्मा को भूल कर देह-अभिमान के गर्त में गिर जाता है। वह 'दास' बनने की आदत के वशीभूत होकर फिर-फिर 'माया-दास' 'इन्द्रिय-दास' 'प्रकृति-दास' 'मनोविकार-दास' बन कर उदास हो जाता है। वह प्रकृति की कान्ति को देखकर भ्रान्ति में पड़कर, शान्ति गँवा कर भौंति-भौंति के दुःखों में पड़ जाता है। यह कैसी विडम्बना है कि वह 'प्रभु-प्रभु' कहते हुए भी प्रभु से दूर हटता जाता है, उसे परम पवित्र मान कर भी अपवित्रता की दलदल में पड़ा रहता है, उसे सर्व-महान, भगवान एवं परम बुद्धिमान मानते हुए भी उसकी आज्ञा को टालता है!

परन्तु जो हुआ-सो हुआ। जो बीती सो बीती। अब तो मानव, जाग! अब तो तेजी से भाग! अब तो विकारों को त्याग। अब तो छोड़ दे घृणा और राग। अब तो बन बे-दाग। रे मनुआ, अब तो प्रभु से लाग। तू दूसरों को देखते हुए भी मत देख। उनकी अच्छाई, चतुराई और कमाई को देखकर तू खुश होने की बजाय ईर्ष्या में जा फँसता है। उनकी बुराई, घटताई और लड़ाई को देखकर तू दुःख में भुनता रहता है। कभी हथेली का पारा बनता है, कभी थाली का बैंगन। रे मन, आखिर तेरा ठिकाना कौन सा है। तू या तो बनता खोटा है या बे-पैदे का लोटा है, या धोबन का सोटा है, या सूखा सड़ियल या किंगकांग-सम मोटा है या बातें करने में चास्कू और चोटा है। अरे, अब छोड़ इन व्यसनो को भी, छोड़ दे प्याज और लहसुन, छोड़ ये भी पान-मसाले, छोड़ ये गुटके। केवल बीड़ी-सिगरेट, शराब-कबाब और प्याज का छौंक ही छोड़ना काफी नहीं बल्कि अब छोड़ नौक-झोंक ये नाजो-अन्दाज, यह चटक-मटक, ये अदा-सदा और अब अपने ठिकाने पर आ। छोड़ इन्हें ओ बेवफा, तब तुझे पीय मिलेंगे। ज्ञान का भी अभिमान छोड़, जवानी के अरमान छोड़, बुरी आदतों के तीर तोड़, गँदगी से मुँह मोड़, अब देख केवल उस ओर। तब तुझे पीय मिलेंगे। (ब्र. कु. जगदीशचंद्र हसीजा)



भरतपुर। हरियाणा के राज्यपाल महामहिम जगन्नाथ पहलड़िया से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र. कु. कविता।



पनवेल (मुम्बई)। ब्र. कु. संतोष आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंच पर हैं ब्र. कु. शिवानी, फिल्म अभिनेता सुरेश ओबेराय व ब्र. कु. तारा।



देहरादून। उत्तराखण्ड के मंत्री दिनेश अग्रवाल तथा ब्र. कु. प्रेमलता व्यसन मुक्ति अभियान का शिवध्वज लहराकर शुभारंभ करते हुए।



नीमच। ब्र. कु. परत, ब्र. कु. किरण, ब्र. कु. आत्मप्रकाश, डीआईजी शेखावत, डी.आई.जी. राठौर तथा ब्र. कु. सुरेन्द्र पत्रिका का विमोचन करते हुए।



दिल्ली (शक्तिनगर)। ब्र. कु. चक्रधारी, दिल्ली शिक्षा प्रभाग की निदेशिका अल्का शर्मा, ग़ोवर जी, डॉ. एम. डी. गुप्ता, रिम्यल ग़ोवर तथा डॉ. मोहित।



कुण्डली (ओ.आर.सी.)। भारत स्वाभिमान ट्रस्ट हरिद्वार के प्रदेशाध्यक्ष परविंदर गुलिया ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र. कु. मूर्ति।



मनाली। राजकीय माध्यमिक विद्यालय के 1200 विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों पर सम्बोधित करते हुए ब्र. कु. प्रो. ओंकार चंद।

बचें ईर्ष्या और पूर्वाग्रह के रोग से

विश्वभर के डाक्टरों का यह मानना है कि उनके पास आने वाले 90 प्रतिशत मरीज मनोवैदिक बीमारियों से ग्रसित होते हैं। क्या आपने कभी इस बात पर गौर किया है? नहीं ना? इसका मुख्य कारण है कि मॉडर्न युग के मनुष्य तो केवल निवारण की ही अपेक्षा रखते हैं, कभी कारण की गहराई में जाना कोई नहीं चाहता।

इसीलिए ही तो आज हम हर मर्ज के लिए कोई न कोई गोलियां खाते रहते हैं। आज हर घर में जैसे आचार का डिब्बा रहता है। ऐसे ही गोलियों (दवाई) का भी एक मोटा डिब्बा रहता है। परन्तु क्या हर बीमारी का इलाज चंद गोलियां खाने से हो जाता है? नहीं, ऐसा संभव नहीं, क्योंकि बरसों से हमारे भीतर, हमारी जड़ों तक कुछ ऐसी मानसिक बीमारियों ने अपनी जगह बना ली है, जिसका इल्म तक हमें नहीं होता जी हां इन्हीं बीमारियों में से बड़ी खतरनाक एक बीमारी है ईर्ष्या और पूर्वाग्रह या पक्षपात।

हममें से कइयों के लिए एसिडिटी की दवाई खाना जैसे एक आम बात है, परन्तु कितने लोग ईर्ष्या रूपी जलन का इलाज पा सके हैं? शायद बहुत कम लोग, क्योंकि जब हमें बीमारी का ही पता नहीं, तो इलाज कहाँ से और किस चीज का करें? हम आये दिन बातों-बातों में काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार को त्यागने की सोचते हैं, परन्तु क्या हमने किसी ईर्ष्या और पूर्वाग्रह या पक्षपात से निजात पाने का उपाय ढूँढ़ा है? शायद नहीं।

पूर्वाग्रह एक विलक्षण मानसिक बीमारी है, जिसका इलाज करना बड़ा मुश्किल है क्योंकि पूर्वाग्रह से ग्रसित व्यक्ति अपने आपको मानसिक बीमार समझता ही नहीं, इसीलिए वह हर प्रकार के इलाज का तीव्र विरोध करता है। ऐसे में वह लोगों की नजरों में केवल तरस और दया का पात्र बनकर रह जाता है। परन्तु हम ऐसे व्यक्तियों को उनके क्रूर दुर्भाग्य के हाथों में छोड़ तो नहीं सकते ना। अतः हमें उन्हें गुणों के आपरेशन थिएटर में दाखिल कर निस्वार्थ प्रेम रूपी विसंज्ञन दे, शुभकामना रूपी ग्लूकोज चढ़ाकर आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग चिकित्सा पद्धति से उन पर सफल शल्य क्रिया करनी होगी, ताकि वह इस महा खतरनाक बीमारी से मुक्त हो सकें।

ईर्ष्या भी पूर्वाग्रह समान बड़ी खतरनाक बीमारी है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ईर्ष्या के बल पर रेस जीती हो या किसी कार्य में सफलता प्राप्त की हो। ईर्ष्या की अग्नि में जलने वाले न जीवन के वास्तविक तत्वों को हजम कर पाते हैं और न वह सच को हजम कर पाते हैं और न वह सच को बर्दाश्त कर पाते हैं। उनके हृदय की धमनियाँ इस कदर सिकुड़ जाती हैं कि जब वे किसी को प्रगति करता देखते हैं या किसी और को अपने से आगे बढ़ता हुआ देखते हैं तब जलन वश उन्हें जैसे दिल का दौरा पड़ जाता है। ऐसे व्यक्तियों के अंदर स्वार्थ रूपी जहर उबलता रहता है, जो उन्हें चैन से कहीं भी बैठने नहीं देता। पूर्वाग्रहित व्यक्ति शांति

ईर्ष्या भी पूर्वाग्रह समान बड़ी खतरनाक बीमारी है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ईर्ष्या का अनुभव न किया हो। ईर्ष्या की अग्नि में जलने वाले न जीवन के वास्तविक तत्वों को हजम कर पाते हैं। और न वह सच को बर्दाश्त कर पाते हैं। स्मरण रहे, ईर्ष्या से नफरत उत्पन्न होती है और यदि हम नफरत से मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें पहले अपने भीतर से ईर्ष्या को निर्वासित करना होगा, क्योंकि जहाँ ईर्ष्या है, वहाँ शांति हो नहीं सकती।

की और इलाज की दृढ़ इच्छा रखते हैं। राजयोग चिकित्सा पद्धति ऐसे व्यक्तियों के अन्दर प्रेम एवं शांति का जलाशय निर्माण कर उन्हें इस अग्नि की तपत से मुक्ति दिलाता है।

स्मरण रहे, ईर्ष्या से नफरत उत्पन्न होती है। और यदि हम नफरत से मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें पहले अपने भीतर से ईर्ष्या को निर्वासित करना होगा, क्योंकि जहाँ ईर्ष्या है, वहाँ शांति हो नहीं सकती। सार्वभौमिक प्रेम ईर्ष्या का मारक है और उसका पोषण केवल ध्यान धारणा से ही किया जा सकता है। तो आइये हम सभी राजयोग की संजीवनी बूटी द्वारा इन महा भयंकर बीमारियों का इलाज कर स्वयं को एवं सारे विश्व को सच्ची मुक्ति दिलायें।

प्रभाव...

नहीं बल्कि आगे के कई जन्मों को भी दिव्य और क्षमतावान बना देता है। आलस्य की तुलना चूहे से की जा सकती है जो फूँक मार-मार कर काटता है और दर्द (मुकसान) का पता भी नहीं लगने देता। आज यह आलस्य रूपी चूहा विश्व के सर्वश्रेष्ठ जीव 'मनुष्य' पर सवार है परन्तु गणेश के समान जब ज्ञानी व विघ्न-विनाशक स्थिति प्राप्त कर ली जाती है तो 'आलस्य' का चूहा 'सवार' से 'सवारी' बन जाता है। चूँकि मन पर संस्कार व बुद्धि का प्रभाव पड़ता रहता है और आलस्य का संस्कार आध्यात्मिक पुरुषार्थ में रोड़ा है अतः आलस्य को समूल दण्ड करे बिना श्रीमत् पर अक्षरशः चलना सम्भव नहीं है। आलस्य एवं निर्मल-तीव्र बुद्धि का आपस में छत्तीस का आँकड़ा है। आलस्य है तो बुद्धि कुण्ठित हो जाती है और अगर बुद्धि पैनी है तो आलस्य पंगु हो

जाता है। बुद्धि की निर्मलता, तीव्रता मन को परमार्थ मार्ग पर आगे ले जाती है और आलस्य का बोझ और अवरोध, मन को पीछे खींच ले जाता है। आत्मा के आध्यात्मिक पुरुषार्थ रूपी नाव में बुद्धि एक 'पाल' है जो लगन के साथ बढ़ती जाती है और आलस्य एक भारी लंगर है जो नाव की यात्रा को शुरू नहीं होने देता। इस आलस्य रूपी लंगर और इसकी बेड़ी को ज्ञान प्रकाश में देखकर योग-अग्नि से नष्ट किया जा सकता है। पाँच विकार, आध्यात्मिक यात्रा या पुरुषार्थ के दौरान स्वतः नष्ट होते जाते हैं परन्तु आलस्य को दृढ़ योग-शक्ति से समाप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक यात्रा और गति नहीं तो जीवन की सार्थकता नहीं। ज्ञान-प्रकाश से इस गुप्त विकार को पहचानें, योग-अग्नि से इसे भस्म करें, दिव्य गुणों की धारणा से इसके पुनः प्रवेश पर रोक लगायें और ईश्वरीय सेवा से व समाज से भी बहिष्कृत कर दें ताकि सतयुगी राज्य का मार्ग खुल जाये।



इन्दौर। बास्केटबॉल स्टेडियम में ईश्वरीय स्नेह मिलन कार्यक्रम में ब्रह्मवत्सों को संबोधित करते हुए ब.कु.शिवानी दीदी।



राजनांदगांव। इंडियन सॉल्वेंट ग्रुप के मेनेजिंग डायरेक्टर बहादुर अली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.मोहन सिंघल। साथ हैं ब.कु.पुष्पा व ब.कु.प्राची।



इन्दौर। अटल इन्दौर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विस के स्टाफ को आध्यात्मिकता द्वारा सड़क सुरक्षा विषय पर संबोधित करते हुए ब.कु.अनिता बहन



जबलपुर, बरेला। 108 कुंडीय श्री रुद्र महायज्ञ में आये हुए श्रद्धालुओं को परमत्स परिचय देते हुए ब.कु.भावना एवं ब.कु.मालती।



टिकरपारा (छ.ग.)। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में भाग लेने के पश्चात ग्रुप फोटो में ब.कु.मंजु बहन, नन्हे मुन्हे बच्चे एवं अन्य।



लूनकरनसर (बीकानेर)। शिवदर्शन यात्रा को शिवध्वज फहराकर रवाना करते हुए तहसीलदार दीनदयाल बाकोलिया, भगोरज जी एवं ब.कु.सत्यवती।



मंगलौर। विधायक यू.टी.खादेर, विधायक जे.आर.लोबो, विधायक मोहिद्युदीन बाबा, ब.कु.मृत्युंजय तथा ब.कु.विश्वेश्वरी कार्यक्रम के दौरान।



समस्तीपुर। व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए अरुण मलिक, ब.कु.अरुणा, श्रीचंद सिंधी, ब.कु.कृष्णा तथा अन्य।



नूर कम्पाउण्ड (गया)। ब.कु.शोला बुद्धिधर्मणों से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए। साथ हैं वैदिक आचार्य पंडित रामाचार्य।

वैसे तो आलस्य की गिनती मूलतः पाँच विकारों में नहीं की जाती है परन्तु इसकी मारक क्षमता इतनी है कि यह बिना किसी बाह्य उत्प्रेरक के वैचारिक परिस्थितियों को आधार बना कर भी चुपचाप आसन जमा लेता है। उनके प्रवेश होने के मोटे तौर पर पाँच कारण हैं - वातावरण, लक्ष्यहीन जीवन, विकृत संस्कार, रोगग्रस्त शरीर और अशुद्ध भोजन।

वातावरण - विकसित देशों में मनुष्य आलस्य रहित हो कार्य करने में जुटे रहते हैं। जबकि पिछड़े देशों में कार्य के दौरान आलस्य आम बात है। सामाजिक वातावरण का मन पर प्रभाव पड़ता है। हम देखते हैं कि सरकारी विभाग का कोई आलस्यग्रस्त कर्मचारी जब किसी कारण से गैर सरकारी विभाग में कार्य पर लगता है तो उसकी कार्यशैली में से आलस्य गायब हो जाता है क्योंकि जहाँ वह कार्य कर रहा है उस वातावरण में ही आलस्य नहीं है। इसलिए जैसा परिवेश वैसा परिवर्तन।

लक्ष्यहीन जीवन - लक्ष्य उन्मुख जीवन हो तो शारीरिक व मानसिक शक्तियाँ उस लक्ष्य को साधने में ठोस प्रयास कर पाती हैं परन्तु लक्ष्यहीन मनुष्य का मन अनेक दिशाओं में भटकता रहता है। इससे निराशा व अलबेलापन आते हैं जो कि आलस्य के प्रवेश द्वार के दो पल्ले हैं। परीक्षार्थी हो या प्रयोगों व अनुसंधान में मशगूल वैज्ञानिक, दोनों ही आलस्य से परे होते हैं क्योंकि अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर वे विकारों से बचे रहते हैं।

संस्कार - कोई भी विकृति मनुष्य को समय-प्रति-समय अपने वशीभूत कर सामान्य व स्वाभाविक स्थिति से नीचे गिराता रहता है। इससे मानसिक ऊर्जा का अपव्यय होता है और अर्जन होता है आलस्य का। विकार मन में ग्लानि और शरीर के स्वास्थ्य की हानि कर मन व शरीर को बोज़िल कर देते हैं जिसकी अभिव्यक्ति फिर आलस्य के रूप में होती है। अतः मुख्य पाँच विकार और उनके अंश भी आलस्य के कारण हैं।

रोगग्रस्त शरीर - रोगी शरीर एक तरफ तो रोग के जीवाणुओं से जूझता रहता है और दूसरी तरफ शरीर में डाली जा रही विभिन्न दवाइयों के दुष्प्रभाव से जूझता है। इससे काफी ऊर्जा नष्ट होती है और मानसिक व शारीरिक क्रियाशीलता हेतु आवश्यक ऊर्जा का संकट खड़ा हो जाता है। इससे फिर आलस्य का आना स्वाभाविक ही है।

अशुद्ध व तामसिक भोजन - ऐसे भोजन को पचाने में शरीर को अतिरिक्त मेहनत करनी पड़ती है जिसमें काफी ऊर्जा खर्च होती है। ऐसा भोजन शरीर को तामसिक व कम शक्तिदायक तत्व ही प्राप्त कराता है जिनका मन पर दूषित प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार तन, मन व स्वास्थ्य रूपी धन, तीनों ऊर्जा संकट से जूझते हुए आलस्य रूपी समाधान को अपनाने पर विवश हो जाते हैं। इनके अलावा आलस्य के अन्य कारण भी हैं जैसे कि 'नितान्त बेफ़िक्री, 'जिम्मेदारियों व कर्तव्यों के प्रति अनभिज्ञता, 'बेरुखी या बेसमझी, 'नशीले पदार्थों का सेवन, अनियमित दिनचर्या, 'जीवन के प्रति निराशाजनक दृष्टिकोण, 'हीन भावना इत्यादि।

प्रभाव आलस्य का

आलस्य मानसिक अवस्था के अनुसार उत्पन्न होता है। यद्यपि मन और शरीर, दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं परन्तु शरीर के प्रभाव से उत्पन्न आलस्य को आलस्य की बजाय 'धकान' कहना सही होगा।

आत्मा शरीर पर शासन करती है और शरीर आत्मा के संकल्पों या आदेशों के अनुसार क्रियाशील होता है। शरीर रात्रि में विश्राम व दिन में श्रम (कर्म) करने का अभ्यस्त होता है परन्तु जिस समय आलस्य के प्रभाव से आत्मा निढाल या अप्रभावी स्थिति में आ जाती है तब शरीर को न तो विश्राम करते बनता है और न ही कार्य करते बनता है। जिस प्रकार किसी भी वाहन या लोहे के उपकरण को जंग लगने से बचाने के लिए उस पर ग्राइमर, पेंट, रंग-रोगन आदि करना ज़रूरी होता है, उसी प्रकार, शरीर रूपी वाहन को आलस्य रूपी जंग से बचाने के लिए आत्मा को उमंग-उत्साह, निश्चय, कार्य के प्रति तत्परता, लगन जैसी आलस्यरोधक धारणाओं से भरपूर रखना ज़रूरी होता है। मनुष्य जब उमंग-उत्साह में होता है तो उसके मस्तिष्क में भरपूर रक्त तीव्र गति से आ रहा

आलस्य रूपी जंग से बचाने के लिए आत्मा को उमंग-उत्साह, निश्चय, कार्य के प्रति तत्परता, लगन जैसी आलस्यरोधक धारणाओं से भरपूर रखना ज़रूरी होता है।

होता है परन्तु उदर में भोजन पड़ते ही रक्त की वह भरपूरता, तीव्रता, अमाशय में एवं इसके आस-पास हो जाती है। इससे मनुष्य में आलस्य के लक्षण आ जाते हैं परन्तु वास्तव में यह आलस्य नहीं है। जिस प्रकार विद्युत ऊर्जा की कमी से निपटने के लिए एक निश्चित स्थान और समय पर उसको काट कर दूसरे स्थान पर आपूर्ति की जाती है, उसी प्रकार मस्तिष्क में जा रहे अतिरिक्त रक्त को अमाशय में आये भोजन को पचाने हेतु भेज दिया जाता है।

मन संकल्प तो बड़े अच्छे-अच्छे करता है परन्तु उन संकल्पों को साकार करने में शरीर पिछड़ जाता है और कर्म-योग का संतुलन न होने से उपलब्धि व शान्ति प्राप्त नहीं हो पाती। इसका कारण है कार्य के प्रति निश्चय की कमी या मन का व्यर्थ भटकना। इसके लिए मानसिक एकाग्रता आवश्यक है। मानसिक एकाग्रता के लिए एक सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव से योग लगाना काफी सहायक है परन्तु इसके लिए परमात्मा का यथार्थ परिचय एवं योग लगाने की विधि का ज्ञान ज़रूरी है। आध्यात्मिक ज्ञान और इसका सही उपयोग ही आलस्य को दूर भगा सकता है।

कोई भी मनुष्य जानते-बूझते आलस्य में नहीं रहना चाहता परन्तु फिर भी कम या ज़्यादा, आलस्य से लगभग सभी प्रभावित दिखाई पड़ते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आलस्य की अति सूक्ष्म प्रवेशता संस्कार के

रूप में हो गई है। व्यर्थ बातों के चिंतन से मानसिक ऊर्जा में कमी आ जाती है जो मन को

विराम या विश्राम देकर पुनःप्राप्त की जा सकती है। व्यर्थ चिंतन में भटक रहे मन को आलस्य में जाकर विश्राम करने का मौका मिलता है ताकि पुनः तरो-ताजा हो सके। मन के विश्राम की दो विधियाँ हैं- निद्रा और आलस्य। आलस्य अस्वाभाविक, अप्राकृतिक और तामसिक विधि है। इससे, 'आलस्य-वृत्ति' बनती है, जो फिर संस्कार में परिवर्तित होकर जी का जंजाल, बन जाती है। आलस्य से दुर्लभ मानसिक शक्तियों, अभिव्यक्तियों और क्षमताओं पर ग्रहण लग कर मानव जीवन पशु-तुल्य बन जाता है।

आलस्य का विकार कैसरग्रस्त कोशिकाओं की तरह है जिन्हें हटाया या मारा नहीं जाता बल्कि जलाया जाता है। योग-अग्नि की प्रचंडता आलस्य रूपी कैसर को जला कर भस्म कर देती है। परन्तु जिस प्रकार कैसरग्रस्त अकेली कोशिका यदि शरीर में रह जाती है तो पुनः विकराल रूप में प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार, यदि आलस्य के ज़हरीले, मीटे-पन का अंश स्मृति में रह गया तो यह पुनः अपने वंश को प्रकट कर देता है। अतः योग की अग्नि और लगन की प्रचंडता नित्य कायम रहे।

उत्साह, बहते हुए निर्मल जल के समान है और आलस्य रुके हुए गंदे जल की तरह। उत्साह का जल आलस्य के मल को बहाने में सक्षम है। अतः निर्मल बनने के लिए ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर उस पर अमल करना होता है। तब ही मल के ऊपर कमल खिल पाता है। उत्साह उनमें होता है जो होलीहंस के समान बीती बातों में से व्यर्थ को छोड़ समर्थ बातों को चुगते हैं और विचारते हैं। हर कार्य को विश्वासपूर्वक, लगन से करना जानते हैं। सर्व के प्रति कल्याण की भावना रखते हैं। उत्साही व्यक्ति की शारीरिक इन्द्रियाँ एवं सभी अंग-प्रत्यंग, मन-बुद्धि के अधीन होते हैं जबकि आलसी व्यक्ति में ये संस्कार के अधीन होते हैं और शरीर द्वारा पूर्व में भोगे गये शारीरिक सुख की स्मृति उन्हें वैसी ही क्रियायें करने को प्रेरित करती रहती है। उत्साही मनुष्य भविष्य व लक्ष्य को बुद्धि में रखकर वर्तमान में जीता है परन्तु आलसी मनुष्य, गुजरे-समय व गुजरे शारीरिक सुख को स्मृति में रखकर भूतकाल से बाहर नहीं निकल पाता। उसमें अनुभव शक्ति का स्थान 'अकर्मण्यता की ग्लानि, इच्छा शक्ति का स्थान संशय व दुविधा और कल्पना शक्ति का स्थान निराशा ले लेती है।

किसी भी मशीन की क्षमता उसके निर्माता द्वारा बता दी जाती है और वह मशीन एक निश्चित विद्युत शक्ति का उपयोग करती है परन्तु मनुष्य की उच्चतम क्षमता का खुलासा इसके निर्माता ने कभी नहीं किया है और इसको मानसिक विद्युत शक्ति को बढ़ाने की पूरी छूट है। अगर मानसिक शक्तियों के तार सीधे-सीधे सर्वशक्तिवान, शक्तिपुंज परमात्मा शिव से जोड़ लिये जायें तो फिर आध्यात्मिक गुणों और शक्तियों का प्रवाह व प्रभाव वर्तमान जीवन को ही (शेष पेज 6 पर)



काठमाण्डू (नेपाल)। गायत्री मिशन के प्राचार्य जयराम मुठलानी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.संतोष तथा ब्र.कु.राज।



किष्ठा (उत्तराखण्ड)। प्रसिद्ध समाज सेवी अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरोज तथा ब्र.कु.तिलक राज।



अमिकापुर। विधायक टी.एस.सिंहदेव, पुलिस महानिरीक्षक टी.जान. लुङकुमेर, ब्र.कु.भारतभूषण व ब्र.कु.विद्या दीप प्रज्वलित करते हुए।



दीव। प्रशासनिक अधिकारी भल्ला साहेब को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.गीता। साथ है कलेक्टर रमेश वर्मा, डीएमसी अध्यक्ष हितेश सोलंकी।



चेन्नई। समाज कल्याण मंत्री श्रीमती वलारमथी, मेयर सैदई दुरइसमी तथा ब्र.कु.देवी व्यसन मुक्ति अभियान का शुभारंभ करते हुए।



वाराणसी। मानव कल्याण मंत्री रिबु श्रीवास्तव, ब्र.कु.विमला, ब्र.कु.सरोज, ब्र.कु.वंदना, डॉ.एस.के.श्रीवास्तव तथा अन्य दीप प्रज्वलित करते हुए।



मुम्बई (गामदेवी)। पयूचर आफ पावर कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। समूह चित्र में बैठे हुए हैं - आस्ट्रेलिया से पधारी ब्र.कु.मॉरिन, यू.के. से सराह कावानाह, एपीजे साधना स्कूल की उप प्राचार्या डॉ.राधिका खन्ना, कोरिया से प्रो.चुंधी यू, अभिनेत्री स्मिता जयाकर, सांसद प्रिया दत्त, लेखिका राज्यलक्ष्मी राव, केन्या से प्रसिद्ध उद्योगपति निजार जुमा, जन स्वास्थ्य विभाग की सचिव मीता राजीवलोचन, आभा सिंह, न्यूज एडिटर गीता आनंद, टाउ आर्ट गैलरी की निदेशिका कल्पना शाह, जसलोक हास्पिटल की डस्ट्री कान्ता मसंद, सोंजा ओहलसन, मैरीगोल्डगुप की सीईओ संगीता जी, ब्र.कु.निहा, आर्किटेक्ट सोनल शाह। खड़े हुए हैं - लैडमार्क ग्रुप के एमडी उदयन ठक्कर, केईसी इंटरनेशनल के एमडी रमेश चंडक, टेक्नेकान हेल्थकेअर के एमडी धनराज चांदरिआनी, मुकुंद लिमि.के एमडी सुकेतु वी.शाह, जयदीप मेहरोत्रा, पी.डी.हिन्दुजा नेशनल हास्पिटल से डॉ.गस्टड दवेर, एशियन स्नूकर चेम्पियन आदित्य मेहता, एंडोस्कोपिक सर्जन डॉ.विपुल राय राठौर, एचनी फिलिप्स, चेतन रायकर, वरुण खन्ना, स्नेहल मुजूमदार, जी.एस.बैनर्जी, डॉ.संजीव कनोरिया, महेश भंसाली, नितिन किलावाला, डॉ.ई.दुरल, डॉ.अशोक मेहता, फ्रांस के मार्क फॉरकेड तथा श्याम सिंघानिया।



आबू रोड (शांतिवन)। टोल हाइवे इंडिया प्रा.लि.के प्रोजेक्ट मैनेजर सुल्तान अहमद खान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए शांतिवन प्रबंधक ब्र.कु.भूपाल। साथ हैं हरवीर सिंह व ब्र.कु.दीपक।



भलवारी (नेपाल)। ब्र.कु.सुरेन्द्र दीदी, पूर्व मंत्री बालकृष्ण खाण्ड, ब्र.कु. परिणीता, ब्र.कु.शांति तथा ब्र.कु.दीपेन्द्र दीप प्रज्वलित करते हुए।



उल्हासनगर। ब्र.कु.सोम, अमरधाम आश्रम के स्वामी अर्जुनदास, महेश सुखरमानी, पूर्व विधायक शीतल दास हरचंदानी दीप प्रज्वलित करते हुए।



कोडोली (वारणा)। ऊर्जा अंकुर में तनाव प्रबंधन कोर्स कराने के पश्चात ब्र.कु.शोभा, ब्र.कु.मनीषा, जनरल मैनेजर संजीव विचारे तथा अन्य।

संस्कार प्राप्त ..

दादी रतनमोहिनी ने कहा कि ईश्वरीय शक्ति के आधार से हम संस्कारित बनेंगे और अपने परिवार को भी संस्कारित कर लेंगे। सत्य पर चलकर ही सतयुगी स्वर्गिक दुनिया का आविर्भाव होगा। आत्मिक भाव से हम सदा शांति, प्रेम और आनंद का अनुभव करते रहेंगे।

ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.चक्रधारी ने कहा कि माताएं बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करना चाहती हैं मगर उनके आचरण और चरित्र के निर्माण पर अपेक्षित ध्यान नहीं जाता। चरित्र निर्माण न होने से व्यक्ति उच्च पद पर रहकर भी पतन की ओर चला जाता है। नैतिकता की ऊंचाई पर ले जाने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है। जब माताओं का हृदय विश्व के लिए वात्सल्य से भरेगा तो जग का कल्याण होने लगेगा। महिलाओं में यह जागृति आवश्यक है कि वे देह के भान से निकलकर यह चिन्तन लाएं कि यह देह तो मात्र चोला है और इसको धारण करने वाली हम अमर आत्मा हैं।

श्रीमती रंजना कुमार ने कहा कि व्यर्थ की बातों से मुक्त होकर ही हममें शक्ति आएगी। महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.सविता ने मंच संचालन किया।

अध्यात्म से ...

मेरे नेत्रों को, मेरे कानों को, मेरी आत्मा को, मेरी संतान एवं मेरे पशुओं को सब प्रकार तृप्त कीजिए। हे देव! मेरे साथियों को तृप्त कीजिए और मेरा कोई साथी मुझसे विमुख न हो। मेरी सभी इंद्रियां, शरीर और आत्मा तक सभी प्रकार से तृप्त व सुखी रहें। मैं सामाजिक कल्याण में जो भी कार्य करूं, सब लोग मेरा सहयोग करें और मैं भी प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे कार्यों में सहयोगी बनूं। निश्चित तौर पर स्वस्थ तन से ही लोक सेवा हो सकती है। एक बार स्वामी विवेकानंद के पास एक युवक आया जो शारीरिक दृष्टि से बहुत कमजोर था। वह युवक चाहता था कि रामकृष्ण मिशन से जुड़कर लोक सेवा का कार्य करे। स्वामीजी ने उसकी भावनाओं को सम्मान देते हुए कहा कि आपकी इच्छा प्रशंसा योग्य है लेकिन मिशन का कार्य करने से पूर्व छः माह तक हनुमान मंदिर की व्यायामशाला में जाना पड़ेगा। जब शारीरिक दृष्टि से पुष्ट हो जाओ तो तुरंत आ जाना। वैदिक ऋषि भी हर व्यक्ति के स्वस्थ रहने की कामना करते हैं और ऐसी व्यवस्था को प्रतिष्ठित करते हैं जिससे सम्पूर्ण मानवता प्रत्येक दृष्टि से सबल हो। यह बात स्वामी विवेकानंद कहते थे कि भारत के भाल पर तिलक करने का अधिकार उसे है जिसका मन पवित्र हो और भुजाएं बलशाली हों।

आत्म-भाव रखना है सतोप्रधानता

अहंकार बहुत बुरा है, उससे कम अभिमान है। अभी-अभी मान चाहिए, मिल गया तो खुश, नहीं मिला तो बड़ा दुःखी हो जाता है इंसान कि मैंने इतना किया फिर भी मुझे मान नहीं मिला। कई बार परिवार में एक व्यक्ति ये चाहना रखता है कि अभी-अभी मेरी बात माने, उसका ये अभिमान है। जबकि सामने वाला दूसरा व्यक्ति समझता है कि अभी-अभी मान मिले तो मैं बात मानूँ। दूसरा सोचता है अभी-अभी मेरी बात मानें। वो सोचता है अभी-अभी मान मिले, तो उसकी बात मानूँ। अगर मान ही नहीं मिलता है तो मानेंगे कैसे ?

इस तरह आज की दुनिया के अंदर जो घरों में कलह-क्लेश होते हैं। उस कलह-क्लेश का कारण क्या है ? बड़ा सोचता है कि मेरी बात मानें और छोटा सोचता है कि इतना किया है, पहले उसका तो मान देवे। फिर हम माने उसकी बात। इस प्रकार के झगड़े, कलह-क्लेश, अभिमान के कारण कई घरों के अंदर, देखने को मिलते हैं। तो अभिमान भी कलह-क्लेश निर्मित जरूर करता है। अभिमान धीरे-धीरे व्यक्ति को असंस्कारी बनाने लगता है।

तीसरी जो अवस्था है देहभान की। जहां व्यक्ति हर वक्त अपने देह से सम्बंधित बातों में ही उलझा हुआ रहता है। आज मेरे देह में, हाथ में दर्द हो रहा है, मेरे पैर में दर्द हो रहा है, मेरे सिर में दर्द हो रहा है, माना भान (कॉन्सियस)। इतने देह के कॉन्सियस में है कि उसको दूसरे के दर्द की महसूसता नहीं है। अपने ही दर्द का वर्णन करते जाता है। उतना वो दर्द का स्वरूप बनता जाता है और उतना जीवन के अंदर, वो दर्द भी बढ़ता जाता है। तो देह भान, देह अभिमान और देह अहंकार तीनों ही गलत है। लेकिन तीनों में परसेटेंज है। अहंकार तो छोड़ना आसान हो जाता है क्योंकि उसकी दुःख की भोगना, हरेक इंसान करके अनुभव कर चुका है इसलिए उसको छोड़ना आसान भी होता है।

लेकिन अभिमान और भान को छोड़ना कभी-कभी तकलीफ दायक हो जाता है। बहुत तकलीफ महसूस होती है। भगवान ने आगे ज्ञान, गेय और ज्ञाता, ये कर्म प्रेरक है और करण, कर्म और कर्ता ये कर्म संग्रह है। इस तरह से इसका

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



भेद बताया है कि कर्म की प्रेरणा तीन प्रकार से हो सकती है। कैसे ?

पहला है ज्ञान, मन में उत्पन्न हुई इच्छा के रूप में। आज कोई भी व्यक्ति कर्म करता है तो उसका पहला कारण उसके अंदर से इच्छा उत्पन्न होती है कि मुझे करना है। जब इच्छा उत्पन्न होती है और इच्छा को लेकर के करता है, तो ये पहला कारण बन जाता है। दूसरा गेय वस्तु के प्रलोभन से कि ये करने से मुझे क्या मिलने वाला है। इस प्रलोभन से, वो कर्म करता है। तीसरा पूर्वाभूत भोग, जो सुख का अनुभव स्मृति के अंदर समाया हुआ है कि ये करने से मुझे सुख मिलेगा इसलिए व्यक्ति करता है। तो वो पूर्व अनुभव जो है, सुख की अनुभूति के अंदर, जो स्मृति में समाया हुआ है तो उस सुख के अनुभव को प्राप्त करने के भाव से वो कर्म करता है। कर्म करने की, ये तीन प्रेरणायें हैं, जिसके आधार पर व्यक्ति आज के संसार के अंदर कर्म करता है। इसीलिए ज्ञान, कर्म और कर्ता भी, गुणों के भेद अनुसार तीन प्रकार के हैं। अब तीन प्रकार का ज्ञान कौन सा है ? संसार के अंदर तीन प्रकार का ज्ञान है।

सबसे पहले सतोगुणी ज्ञान अर्थात् जिस ज्ञान से अनंत रूपों में विभक्त सारे जीवों में आध्यात्मिक प्रकृति को देखते हैं तो वो सतोगुणी ज्ञान है। हर एक व्यक्ति के अंदर आत्मा को देखो। जितना ये ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट है कि सब आत्मायें हैं और सभी परमात्मा की संतान हैं, तो सारे जीवों में वह आध्यात्मिक प्रकृति को देखता है। आत्मभाव को विकसित करना ही है सतोप्रधान ज्ञान।

रजो प्रधान ज्ञान कौन सा है ? जो ज्ञान सम्पूर्ण भूतों में भिन्न प्रकार के अनेक भावों को लेकर जानता है। अर्थात् ये ऊंचा है, ये नीचा है, ये यह जाति का है, यह इस जाति का है। तो ये सम्पूर्ण भूतों में भिन्न प्रकार के अनेक भावों को लेकर के जानता है कि ये अच्छा है और ये बुरा है, ये रजोगुणी ज्ञान है। भेद को लेकर के व्यवहार में आना ये ज्ञान जब बुद्धि में है, तो ये रजोगुणी ज्ञान है।

जो ज्ञान शरीर की आवश्यकताओं को पूर्ण करने तक सीमित है और उसे सब कुछ मानकर सत्य को जाने बिगर उसमें लिप्त रहते हैं वह तमोगुणी ज्ञान है। यहां व्यक्ति देह को देखता है, देह की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए सब कुछ करता है। इस सीमित ज्ञान को ही सत्य माना जाने लगता है। आत्मा रूप में वह नहीं देखता है। इसे तमोगुणी ज्ञान कहा जाता है। (क्रमशः)

कथा सरिता

दुश्मन कौन ?

एक दोपहर जब एक बड़ी कंपनी के कर्मचारी लंच टाइम से वापस लौटे, तो उन्होंने नोटिस बोर्ड पर एक सूचना देखी। उसमें लिखा था कि कल उनका एक साथी गुजर गया, जो उनकी तरक्की को रोक रहा था। कर्मचारियों को उसे श्रद्धांजलि देने के लिए बुलाया गया था। श्रद्धांजलि सभा कम्पनी के मीटिंग हॉल में रखी गई थी।

पहले तो लोगों को यह जानकर दुख हुआ कि उनका एक साथी नहीं रहा, फिर वो उत्सुकता से सोचने लगे कि आखिर वह कौन हो सकता है। धीरे-धीरे कर्मचारी हॉल में जमा होने लगे। सबके होठों पर एक ही सवाल था, आखिर वह कौन है, जो हमारी तरक्की की राह में बाधा बन रहा था। चलो, राहत की बात है कि अब वह नहीं रहा। जैसा कि होता है, लोग किसी के गुजर जाने के बाद उसकी बुराइयां भूल जाते हैं, सभी उसके जाने का अफसोस करने लगे।

हॉल में दरी बिछी थी और दीवार से कुछ पहले पर्दा लगा हुआ था। वहां एक और सूचना चिपका दी गई थी कि गुजरने वाले की तस्वीर पर्दे के पीछे दीवार पर लगी है। सभी एक-एक करके पर्दे के पीछे जाएं, उसे श्रद्धांजलि दें और फिर तरक्की की राह पर अपने कदम

बढ़ाएं, क्योंकि उनकी राह रोकने वाला अब पता चल चला गया। कर्मचारियों के चेहरों पर हैरानी का भाव था।

कर्मचारी एक-एक करके पर्दे के पीछे की ओर जाते और जब वे दीवार पर टंगी तस्वीर देखते, तो अवाक रह जाते। उनके मुंह से बोल ही न फूटते। दरअसल, दीवार पर तस्वीर की जगह एक आईना टंगा था। उसके नीचे एक पर्ची लगी थी, जिसमें लिखा था, 'दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है, जो आपको तरक्की को रोक सकता है, आपको सीमाओं में बांध सकता है। और वह आप खुद हैं।' हॉल के बाहर बॉस कर्मचारियों का स्वागत कर रहा था इन शब्दों से कर रहा था, 'अपने नकारात्मक हिस्से को श्रद्धांजलि दे चुके नये साथियों का स्वागत है।'

शिक्षा - दुनिया में आपके सबसे बड़े दुश्मन हैं आपके खुद के नकारात्मक विचार और आपके द्वारा पाली गई कमजोरियां। तमाम नकारात्मक भावों और कमजोरियों को दफना दें और तरक्की की राह पर बढ़ चलें। फिर दुनिया की कोई भी ताकत आपको सफल होने से नहीं रोक सकती।

किसी दौर में एक अत्याचारी राजा हुआ। वह जनता पर बड़ा जुल्म करता। अपनी ऐशोआराम के लिए गरीब जनता से

जैसी करनी..

अचंभित हैं। हुआ कुछ इस तरह कि एक दिन मैं शिकार के लिए जंगल गया। वहां मैंने पाया कि एक कुत्ता एक मासूम हिरन

कर वसूल करता। उसके अन्याय और अत्याचार से पीड़ित जनता दिन-रात उसे बददुआएं देती और उसकी मृत्यु की कामना करती थी।

एक दिन अचानक राजा ने बकायदा घोषणा करवा दी कि वह अब से न्याय करेगा। किसी पर किसी तरह का अत्याचार न होगा। सभी प्रजाजन को उनके जान-माल की सुरक्षा प्राप्त होगी। शुरू-शुरू में किसी को भी निर्दयी राजा की इस बात पर बिल्कुल भरोसा न हुआ। काफी समय तक जब सब कुछ राजा के वचन अनुसार ही सब कुछ ठीक चलता रहा, तो प्रजा को राजा के बारे में अपनी धारणा बदलनी पड़ी। अब अत्याचारी राजा सबके मान-सम्मान का पात्र बन गया। उसे आदर्श राजा माना जाने लगा।

इतना सब हो जाने के बाद भी यह रहस्य बना रहा कि आखिर ऐसे अत्याचारी राजा का हृदय परिवर्तन कैसे हो गया? आखिर वह क्या बात है, जिसने राजा के जीवन में ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। मंत्रीगण ने आखिर राजा से यह सवाल पूछ ही लिया।

राजा सवाल सुनकर मुस्करा दिए। उन्होंने कहा, 'मैं जानता था कि सारे लोग-मेरी प्रजा, मेरा परिवार और आप सभी मेरे परिवर्तन से

के पीछे पड़ गया। हिरन ने भागकर किसी तरह अपनी जान बचा ली। मगर फिर भी कुत्ते ने उसे घायल कर दिया। वापसी में मेरा एक गांव से गुजरना हुआ। वहां एक बार फिर मुझे वही कुत्ता दिखाई दिया। वह एक आदमी पर भौंक रहा था। उस आदमी ने एक बड़ा पत्थर उठाकर इतनी जोर से मारा कि उस कुत्ते की टांग टूट गई। वह आदमी अभी थोड़ी दूर गया था कि एक घोड़े ने उसको ऐसी लात मारी कि उसके घुटने टूट गये। घोड़ा लात मारकर दूसरी तरफ भागा, तो सीधा एक गड्ढे में जा गिरा और उसकी टांग टूट गई। यह सब देखकर मेरे मन में विचार आया कि मुझे भी आज नहीं तो कल, अपने अत्याचारों के बदले अत्याचार का शिकार होना ही होगा। इसलिए मैंने सोचा कि बेहतर होगा, अगर मैं अच्छे काम करूँ। तब मैं उसके बदले शायद कुछ अच्छा भी पा सकूँ।

शिक्षा - इस दुनिया में सभी को राजा की तरह एक जगह, एक साथ सच की पूरी तस्वीर एक साथ दिखाई दे जाए, यह जरूरी नहीं। मगर राजा की बात से सच समझ में आ जाए, यह जरूर हो सकता है।

एक बार माया का मन अपने काम से ऊबा तो उसने सन्यास लेने की ठानी। अपनी सारी सम्पत्ति और सवारियां उसने बेचना शुरू कर दिया। षट के दिन झुंड के झुंड लोग आए और उन्हें खरीदने लगे।

आलस्य

माया ने कहा, "यह मेरी सबसे प्रिय, कीमती और करामाती चीज है। जो कुछ मैंने बेचा, वह इसके जरिए मैं दुबारा हासिल कर सकता हूँ। सन्यास में भी मन न लगा तो इसी के सहारे अपना करोबार फिर शुरू करूंगा। इसे बेच दूंगा तो मेरा अस्तित्व ही खतरों में पड़ जाएगा।"

नशेबाजी, चुगली, ईर्ष्या, बेईमानी, कुढ़न, जल्दबाजी, बदहवासी जैसी चीजें लोगों को खूब पसंद आईं और उन्होंने मनमाने दाम देकर इन्हें खरीदा। जो न खरीद सके, वे हाथ मलते रह गए।

देखते-देखते माया का सारा असबाब बिक गया। अब उसके पास एक ही चीज बची, जिसे वह बेचना न चाहता था। खरीददारों में से एक ने कहा, "जब आप सब कुछ छोड़ रहे हैं तो इस एक चीज से ममता क्यों? इसे भी बेचकर निश्चित हो जाइए न!"

उत्सुक लोगों ने माया से पूछा, "कृपया इस वस्तु का नाम तो बता दीजिए।" माया ने गर्व के साथ कहा, 'यह है आलस्य। आलस्य के रहते वह सब मिलता ही रहेगा जो मैं चाहता हूँ।' आलस्य के अवगुण से ही सारे अवगुणों को वापिस लाया जा सकता है। इसलिए आलस्य का त्याग अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षा - आलस्य सर्व दुर्गुणों का बीज है।

सूफी संत फरीद अपने शिष्यों के साथ एक गांव से गुजर रहे थे। वहीं रास्ते में एक आदमी अपनी गाय को रस्सी से बांधे लिए जा रहा था। फरीद ने उस आदमी से थोड़ी देर रुकने की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना पर वह रुक गया। अब संत फरीद ने अपने शिष्यों से पूछा, 'इन दोनों में मालिक कौन है - गाय या आदमी?' शिष्यों ने कहा, 'यह भी कोई बात हुई, जाहिर है, आदमी गाय का मालिक है।' फरीद ने फिर कहा, 'यदि गाय के गले की रस्सी काट दी जाए तो कौन किसके पीछे दौड़ेगा - गाय आदमी के पीछे या फिर आदमी गाय के पीछे?' शिष्यों ने कहा, 'जाहिर है, आदमी गाय

बन्धन

के पीछे भागेगा।' 'तो फिर मालिक कौन हुआ?' फरीद ने शिष्यों से कहा, 'यह जो रस्सी तुम्हें दिखाई पड़ती है गाय के गले में, यह दरअसल आदमी के गले में है। आत्मा की सम्पत्ति को छोड़कर बाकी हर सम्पत्ति हमारे गले का फंदा बन जाती है।' यथार्थ में आत्मसंपदा ही सच्ची सम्पदा है। सच्चे शिष्य ही इसे पाने में समर्थ होते हैं।

शिक्षा - आध्यात्मिक पथ के राही को बाहरी व आंतरिक रूप से आकर्षण में बांधने वाली बातों से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह हमें परमात्मा से सच्ची प्राप्तियां करने नहीं देंगी।



नंदुरवार। शिक्षा मंत्री डॉ. विजयकुमार गावित को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विजया व ब्र.कु.राधा। साथ हैं एस.पी.डॉ.संजय।



नगर (भरतपुर)। सांसद रतनसिंह एवं विधायक अनिता सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.होरा।



उस्मानाबाद। राज्यमंत्री पद्मसिंह पाटिल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुरेखा, भंसाली भाई, विनायकराव पाटिल तथा संतोष जाधव।



जोधपुर। सर्वधर्म सम्मेलन के अवसर पर महापौर रामेश्वर दधीच, उपमहापौर तथा ब्र.कु.शील बहन ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।



मंदसौर। पर्यावरण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए आयुर्वेद चिकित्सक देवेन्द्र पुराणिक, श्रवण त्रिपाठी, ब्र.कु.समिता, ब्र.कु.हेमलता तथा अन्य।



दुमका। झारखण्ड के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.जयमाला। साथ हैं ब्र.कु.रेखा।

आपकी खुशी आपके पास



क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ 'पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 8140211111 channel-697



कल्याण। देश की प्रथम उपनगरीय महिला रेल चालक सुरेखा यादव तथा सहायक रेल चालक संगीता सरकार के साथ ब.कु.अल्का एवं ब.कु.रुहेहा।

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइट तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें - E-mail- mediabkm@gmail.com, Mob.-8107119445



सूचना

आप समी भाई-बहनो की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन' नवीन संस्करण के साथ, भगवान की? की गीता का आध्यात्मिक रहस्य पुस्तक, हैपिनेस इंडेक्स, कथा साहित्य उपलब्ध है। इसे आप ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

अध्यात्म से होता है स्वस्थ समाज का निर्माण



(स्वामी चक्रपाणि)

भारतीय आध्यात्मिक धारा एकांगी नहीं है, वह बहुपक्षीय है। जीवन के प्रत्येक अवयव को स्पर्श करती हुई कल्याणकारी एवं सुखमय विश्व की रचना करने का संकल्प है भारतीय अध्यात्म। तन और मन दोनों का स्वस्थ होना किसी भी उन्नतिशील सभ्यता के लिए आवश्यक है। अतः धर्म से योग और ध्यान को जोड़ा गया। साथ ही यह कामना की गई कि प्रत्येक व्यक्ति सुखमय, निरोगी और उमंगमय जीवन जीये।

वैदिक ऋषियों ने परोक्ष सत्ता से कामना की कि हम सौ वर्ष तक देख सकें। सौ वर्षों तक बोध प्राप्त करते रहें। सौ वर्षों तक हम उन्नति करते रहें। सौ वर्षों तक हम जीवित रहें और उससे भी अधिक वर्षों तक जीवित रहते हुए अपने समस्त कार्य निर्विघ्न और कुशलतापूर्वक करते रहें। ऋषियों ने 'हम' सर्वनाम का प्रयोग किया है। यह समस्त मानवता का द्योतक है। सम्पूर्ण मानव जाति का प्रतिनिधित्व करते हुए ज्ञानी और तपस्वी ऋषि एक स्वस्थ और क्रियाशील समाज के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध थे। यही प्रतिबद्धता

प्रश्न - हम सभी धर्म को मानने वाले हैं। परन्तु आज देखा ये जा रहा है कि मनुष्य के कर्म उसके धर्म के अनुकूल नहीं रहे हैं। हम क्या करें जो कर्म धर्म के साथ जुड़ जाएं?

उत्तर - धर्म ने मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म सिखाये। धर्म था ही मनुष्य के कर्म पर अंकुश लगाने के लिए। परन्तु समय बीता, मनुष्य में गिरावट आई क्योंकि उसने धर्म का अनुसरण करना बंद कर दिया। परिणामतः धर्म मंदिरों तक सीमित रह गया या ग्रन्थों में सिमट गया। सभी धर्मों का यही हाल हुआ। इस कारण से मनुष्य के पास धर्म का बल नहीं रहा। अब पुनः आवश्यकता है कर्म को धर्म से जोड़ने की।

धर्म मनुष्य को पवित्रता सिखाता है, मन की शुद्धि व श्रेष्ठ आचरण सिखाता है तो किसी आयु तक उसे संयमित जीवन जीना ही चाहिए। चार विशेष कर्म जीवन में ले आये तो धर्म के साथ कर्म भी जुड़ जाएगा। सबको सुख देना, ईमानदारी से कार्य व्यवहार करना, मुख से मुठ व नम्रतापूर्ण वचन बोलना तथा लोभ व इच्छाओं का गुलाम न होना। इन श्रेष्ठ कर्मों को जीवन में अपनाने से पुण्य कर्मों का खाता बढ़ता रहेगा और धर्म के बहुत से उपदेश स्वतः ही जीवन में आ जाएंगे। इसके विपरीत यदि मनुष्य अति विषय वासनाओं में रहता है, यदि वह पाप कर्मों में प्रवृत्त रहता है, यदि वह दूसरों का धन हड़पता है और यदि वह दूसरों को सताता है, तो वह धर्म का अनुयायी नहीं है। कर्म, धर्म के साथ जुड़ जाए इसके लिए परमात्मा से योगयुक्त होकर शक्ति लेना भी आवश्यक है।

प्रश्न - बाबा हमेशा कहते हैं, कर्म करते हुए कर्म से न्यारे रहो। क्या यह सम्भव है - यदि हाँ तो कैसे?

उत्तर - मनुष्य निरंतर कर्म कर रहा है। प्रत्येक कर्म उस पर अपना प्रभाव डाल रहा है, यों कहें कि कर्म उसे बाँध रहे हैं अर्थात् वह कर्मबंधन में जकड़ता जा रहा है, परन्तु हमारा लक्ष्य है - कर्मातीत होना। कर्मातीत स्थिति का अर्थ है कर्म के प्रभाव से मुक्त रहना व कर्म के परिणाम के प्रभाव से भी मुक्त रहना। परन्तु यदि हम देहभान में रहकर कर्म करते हैं तो हमारे कर्म हमारे लिए बंधन का काम करते हैं जबकि आत्मिक स्थिति में रहकर किये जाने वाले कर्म दिव्य कर्म कहलाते हैं और

भारतीय दर्शन का आधार भी बनी।

यहां यह उल्लेखनीय है कि समस्त वैदिक प्रार्थनायें सम्पूर्ण मानवता के हित में समर्पित हैं। उन्हें किसी विशेष आस्था या वर्गीय निष्ठा से नहीं जोड़ा गया है। यजुर्वेद में ऋषि अपनी इसी विराट दृष्टि को प्रकट करते हुए कहते हैं कि हे मनुष्यो! तुम्हारी आयु यज्ञ से वृद्धि को प्राप्त हो और वह कार्य करने में समर्थ हो। तुम्हारे प्राण बलकारी और वृद्धि को प्राप्त हों। तुम्हारे नेत्र-इन्द्रियों का सामर्थ्य यज्ञ व शिष्टाचार से समर्थ हो। तुम्हारी श्रवण शक्ति यज्ञ से वृद्धि को प्राप्त हो। तुम्हारी पीठ का बल यज्ञ से शक्ति को प्राप्त करे। तुम्हारी उपासना एवं सत्कर्म यज्ञ से वृद्धि और सम्पन्नता को प्राप्त हो। तुम सब परमेश्वर की श्रेष्ठ प्रजायें बनकर रहो तथा तुम लोग दिव्य एवं गुणवान होकर जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाओ। इस आशीष युक्त मंत्र में यह तो स्पष्ट होता है कि हमारे तपस्वियों की आध्यात्मिक ऊर्जा के आशीर्वाद का

छोर सम्पूर्ण है। वह केवल सदाचार को महत्व देते हुए मानव कल्याण की कामना करते हैं।

यहां यह समझ लेना चाहिए कि केवल मन की पवित्रता एवं सदाचार ही विश्व कल्याण का अंग नहीं है। अपने उत्तम विचारों और संकल्पों को कार्य रूप भी दें। इसके लिए अच्छे स्वास्थ्य का होना भी परमावश्यक है। लोक सेवा तब ही संभव है जब शारीरिक और मानसिक दृष्टि से व्यक्ति सक्षम हो। इसलिए आयुर्वेद में योग और अध्यात्म क्रियाओं के शारीरिक प्रकल्पों को धर्म से जोड़ा गया है। प्रातः शौच जागरण और सूर्योदय से पूर्व स्नान तथा मनन की व्यवस्था। स्वस्थ समाज का ही संकल्प है। योग को ध्यानमय करना तन और मन को सुंदरता प्रदान करना है। इसलिए यजुर्वेद के अन्य मंत्र में साधक कहता है कि हे देव! मेरे मन को, मेरी वाणी को, मेरे प्राणों को, (शेष पंक्त 8 पर)

ऐसे कर्म जीवन को दिव्य बनाने वाले हैं।

हम ऐसे ढंग से कर्म करें कि हमें कर्मोपरांत यह लगे कि मानो हमने कुछ भी नहीं किया। यही आत्मा की निर्लिप्त स्थिति है। इसे ही कह दिया है कि आत्मा निर्लेप है। आत्मा निर्लेप नहीं है बल्कि यह उसकी सम्पूर्ण योगयुक्त स्थिति है। कर्म करने से पूर्व हम जिस स्मृति में होते हैं उसके वायब्रेन्स पूरे कर्म को प्रभावित करते हैं। हमारी स्मृति ही हमारी स्थिति का निर्माण करती है। इसलिए हमारे कर्म दिव्य व अलौकिक हों, तो कर्म से पूर्व इस तरह अभ्यास करें।

प्रथम - यह संकल्प नेचुरल कर दें कि मेरा हर कर्म परमात्म-अर्थ है। मैं अपने या परिवार के लिए कर्म नहीं कर रहा हूँ। बाबा से बातें करें - बाबा मेरा



हर धर्म तुम्हारे लिए है। द्वितीय - अपने कर्मों को प्रभु अर्पण कर दें। कर्म के परिणाम को भी प्रभु अर्पण करें। चाहे परिणाम अच्छा हो या बुरा, महिमा हो या ग्लानि, हार हो या जीत, सब प्रभु अर्पण।

तृतीय - अभ्यास करें कि मैं आत्मा इन कर्मन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ और बाबा हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है। कभी यह अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ या मैं एक महान आत्मा हूँ। कभी परमात्म स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करके कर्म करें। ऐसा करने से कर्म करते भी न्यारेपन की अनुभूति होती रहेगी।

प्रश्न - हमारे यहाँ एक स्लोगन लिखा रहता है कि स्वयं को बदलो तो जग बदलेगा। इसका क्या अर्थ है और क्या एक व्यक्ति के बदलने से विश्व बदल जायेगा?

उत्तर - देखने में तो ऐसा ही लगता है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा। एक व्यक्ति अच्छा बन भी जाए तो इससे क्या होता है। परन्तु सत्य कुछ और

है। आपको यह जानना चाहिए कि ये महावाक्य किसने किसको कहे! हम बता दें - स्वयं भगवान ने देवकुल की महानात्माओं के लिए ये वचन उच्चार्ये। वे आत्माएँ इष्टदेव, देवी हैं और पूर्वज हैं। उन एक-एक महानात्माओं से लाखों महानात्माएँ जुड़ी रहती हैं। उनका परिवर्तन उन लाखों आत्माओं को परिवर्तित कर देता है। वे ही इस कल्पवृक्ष के मास्टर बीज भी हैं। उनका परिवर्तन विश्व की अनेक आत्माओं पर प्रभाव डालता है। इस तरह यह कार्य चलता है। देखिए एक घर में जो परिवार का बड़ा होता है, उसकी स्थिति का प्रभाव सब पर पड़ता है। यदि वह क्रोधी है, कटुभाषी है तो परिवार पर उसका बुरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसी तरह जो सृष्टि के बड़े हैं, पूर्वज हैं, उनका प्रभाव भी पूरी सृष्टि पर पड़ता है। **प्रश्न - हमारे सेवाकेन्द्र के मकान को किसी ने बड़ी ही चालाकी से अपनी पत्नी के नाम करा लिया है। हमें इन बातों का इतना ज्ञान नहीं था, उसने हमारे भोलेपन का फायदा उठाया। हम इसमें क्या योग का प्रयोग करें?**

उत्तर - अवश्य ही उस व्यक्ति के मन में पाप आ गया है। संसार में पाप अति बढ़ता जा रहा है। अपने ही अपनों को धोखा दे रहे हैं। सम्पत्ति ने तो अनेकों के मन को पाप से भर दिया है। अब थोड़े ही समय में ऐसे पापी बड़ा कष्ट पायेंगे और जो भगवान को धोखा देने की सोच रहे हैं वे तो स्वयं के लिए रसातल जाने का मार्ग बना रहे हैं। सम्पत्ति आने वाले समय में मनुष्य को ज्यादा कष्ट देगी। विनाशकाल में सुखी वही रहेंगे जिन्होंने अपनी सम्पत्ति को पुण्यों में बदल दिया होगा।

आप डरें नहीं, आप भोले हैं तो भोलानाथ आपके साथ है। भगवान क्योंकि परम सत्य है, इसलिए उसे केवल सत्य ही स्वीकार्य है। आप सच्चे मन से उन्हें क्षमा कर दें और इक्कीस दिन योग करें, एक घण्टा प्रतिदिन। योग से पहले दो स्वमान याद करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न विनाशक हूँ। इससे सेवा में आया यह विघ्न नष्ट हो जाएगा।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान -मैं तन, मन, धन, जन का भाग्य प्राप्त आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - 'भाग्य विधाता बाप आप बच्चों पर राजी हुआ है। उसकी निशानी है ऐसे मास्टर भाग्य विधाता बच्चों के मस्तक पर सदा भाग्य का सितारा चमकता रहता है अर्थात् उनकी मूर्त और सूरत से सदा रूहानी चमक दिखाई देती है। मूरत से सदा राजी रहने के फीचर्स दिखाई देंगे। सूरत से सदा रूहानी सीरत अनुभव होगी। इसको कहते हैं मस्तक में चमकता हुआ भाग्य का सितारा। हर बात में तन, मन, धन, जन -चारों रूप से अपना भाग्य अनुभव करेंगे।'

तन का भाग्य - तन का हिसाब किताब कभी प्राप्ति वा पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न अनुभव नहीं होगा। तन कभी भी सेवा से वंचित होने नहीं देगा। कर्मभोग के समय भी ऐसे भाग्यवान किसी न किसी प्रकार से सेवा के निमित्त बनेंगे।

मन का भाग्य - मन सदा हर्षित रहेगा। क्योंकि भाग्य के प्राप्ति की निशानी हर्षित रहना ही है। जो भरपूर होता है वह सदा ही मन से मुस्कुराता रहता है। मन के भाग्यवान सदा इच्छा-मात्रम अविद्या की स्थिति वाले होते हैं। भाग्यविधाता के राजी होने के कारण सर्व प्राप्ति सम्पन्न अनुभव करने के कारण मन का लगाव व

झुकाव व्यक्ति या वस्तु के तरफ नहीं होगा। इसको ही सार रूप में कहते हो 'मनमनाभव'।

मन को बाप की तरफ लगाने में मेहनत नहीं होगी लेकिन सहज ही मन बाप की मुहब्बत के संसार में रहेगा। 'एक बाप दूसरा न कोई' -इसी अनुभूति को मन का भाग्य कहते हैं।

धन का भाग्य - ज्ञान धन तो है लेकिन स्थूल धन का भी महत्व है। धन के भाग्य का अर्थ यह नहीं कि ब्राह्मण जीवन में लाखों पति वा करोड़पति बनेंगे। लेकिन धन के भाग्य की निशानी है कि संगमयुग पर जितना आप ब्राह्मण आत्माओं को खाने-पीने और आराम से रहने के लिए आवश्यकता है, उतना आराम से मिलेगा। और साथ-साथ धन चाहिए सेवा के लिए। तो सेवा के लिए भी कभी समय पर कमी वा खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। कैसे भी, कहाँ से भी, सेवा के समय पर भाग्यविधाता बाप किसको निमित्त बना ही देते हैं। धन के भाग्यवान कभी भी अपने 'नाम' की वा 'शान' की इच्छा के कारण सेवा नहीं करेंगे। अगर नाम-शान की इच्छा है तो ऐसे समय पर भाग्य विधाता सहयोग नहीं दिलायेगा। आवश्यकता और इच्छा में रात-दिन का अंतर है। सच्ची आवश्यकता है और सच्चा मन है तो कोई भी सेवा के कार्य में सफल होगा ही लेकिन भण्डारी में और ही भरपूर हो जायेगा, बचेगा।

इसलिए गायन है 'शिव के भण्डारे और भण्डारी सदा भरपूर'। तो सच्ची दिल वालों की और सच्चे साहेब के राजी होने की निशानी है - 'भण्डारा भी भरपूर, भण्डारी भी भरपूर'। यह है धन के भाग्य की निशानी।

जन का भाग्य - जन अर्थात् ब्राह्मण परिवार वा लौकिक परिवार, लौकिक सम्बन्ध में आने वाली आत्माएं वा अलौकिक सम्बन्ध में आने वाली आत्माएं। तो जन द्वारा भाग्यवान की पहली निशानी है - जन के भाग्यवान आत्मा को जन द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की प्राप्ति रहेगी। कम से कम 95 प्रतिशत आत्माओं से प्राप्ति का अनुभव अवश्य होगा। पहले भी सुनाया था कि पांच प्रतिशत आत्माओं का हिसाब-किताब भी चुकनु होता है। इसलिए उन्होने द्वारा कभी स्नेह मिलेगा, कभी परीक्षा भी होगी। लेकिन पांच प्रतिशत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। ऐसी आत्माओं से भी धीरे-धीरे शुभभावना-शुभकामना द्वारा हिसाब चुकनु करते रहो। तो भाग्यवान आत्मा की निशानी है - जन के रहे हुए हिसाब-किताब को सहज चुकनु करते रहना और बाकी आत्माओं द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की अनुभूति करना। जन के भाग्यवान आत्माएं, जन के सम्पर्क-सम्बन्ध में आते 'सदा प्रसन्न रहेंगी', प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त -यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। ऐसे प्रश्न उठने वाले को प्रश्नचित्त कहा जाता है। प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा 'क्यों' की लाइन लगी रहती है। इसलिए इस व्यर्थ की रचना को कंट्रोल करो।

द्वितीय सप्ताह

स्वमान -मैं इस तन में अवतरित फरिश्ता हूँ।

योगाभ्यास - फरिश्ता बनकर बाबा के पास जाना और स्वयं को चार्ज करके वापस आना...सारे संसार को सकाश देना। दिन में पच्चीस बार इसका अभ्यास करें।

प्रतिदिन के लिए सुंदर अभ्यास -सोमवार -शक्तियों का फरिश्ता बनकर सर्व आत्माओं को शक्ति देना।

मंगलवार -शांति का फरिश्ता बनकर शांति के वायब्रेशन्स देना। बुधवार -पवित्रता का फरिश्ता बनकर सर्व को पवित्रता के वायब्रेशन्स देना।

गुरुवार -सुख का फरिश्ता बनकर सबको सुख देना।

शुक्रवार -ज्ञान का फरिश्ता बनकर ज्ञान देना।

शनिवार -प्रेम का फरिश्ता बनकर सर्व आत्माओं को प्रेम देना।

रविवार -वरदानी फरिश्ता बनकर सबको वरदान देना।

अमृतवेले बापदादा का अपने सामने आह्वान कर उनसे बातें करते हुए उनके प्यार में मगन हो जाना। रूहानी ड्रिल करें। अभी-अभी फरिश्ता और अभी-अभी निराकारी।

चिन्तन -खुशी गुम क्यों होती है? खुशी को निरंतर कायम रखने के लिए दस प्वाइंट्स लिखें।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - प्रिय आत्मन! अब हम सभी विश्व कल्याणकारी आत्मायें विश्व को सकाश दिया करेंगे ताकि सर्व आत्मायें मुक्ति और जीवन मुक्ति का वर्षा प्राप्त कर सकें।



तासगांव। ब.कु.डॉ.वैशाली को 'अनमोल रत्न' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए ग्राम विकास मंत्री जयंतराव पाटिल।



भवात (चण्डीगढ़)। खुराहाल जीवन कार्यक्रम में विधायक एन.के.शर्मा, मेहर मित्तल, कमेटी प्रधान कुलविन्द सिंह सोही तथा ब.कु.हरविन्दर।



चुरू। ब.कु.पीयूष कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। मंच पर हैं गर्ल्स कालेज के निदेशक सोहन सिंह, पालिटिकल कालेज के प्रिंसिपल ओमप्रकाश तंवर, ब.कु.सुमन तथा ब.कु.दर्शिता।



पेट तउगांव। ल्यसनमुक्ति रैली के उद्घाटन कार्यक्रम में वैद्यकीय अधिकारी नूतन पोरे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु.डॉ.रश्मि व ब.कु.राणी।



जयपुर (कमल अपार्टमेंट)। महिला मण्डल कार्यकारिणी समिति के नव निर्वाचित सदस्यों के साथ ब.कु.पूनम, ब.कु.अर्चना तथा अन्य।



फलोदी। शोभा यात्रा को रवाना करते हुए नगरपालिका बिल्डिंग कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश बोहरा, पार्षद बृजमोहन, ब.कु.अनिता।

सत्यम शिवम सुंदरम...

लगाने में मीडिया की भूमिका' विषय पर सम्बोधन के दौरान कहा कि सकारात्मक सोच में आत्मबल के सहारे कोई भी लक्ष्य प्राप्त करना असंभव नहीं है। संस्था को साधुवाद देते हुए उन्होने कहा कि केवल ब्रह्माकुमारी संस्था ही मीडिया को प्रति वर्ष आत्म-चिंतन करने का मंच प्रदान करता है। संस्था यह महसूस करती है कि स्वयं परिवर्तन के सहारे विश्व परिवर्तन लाने की शक्ति मीडिया में है लेकिन उसका सही एहसास कराना होगा। मीडिया अर्धसत्य को सत्य की तरह प्रस्तुत करता है। स्वार्थ पोषित सूचनाओं का प्रसार हो रहा है। हमारी शक्ति का नकारात्मक प्रयोग बंद होना चाहिए।

युग प्रभात के संपादक जीवन साहू ने कहा कि मॉरीशस में ले जाये गये असंख्य भारतीयों ने अपनी संस्कृति नहीं छोड़ी। इसी कारण उनमें से ही अंततः प्रधानमंत्री का चयन हुआ। नेताओं को भ्रष्टाचार व अपसंस्कृति के लिए जिम्मेवार ठहराते हुए उन्होने कहा कि अढ़ाई सौ से अधिक बहुदेशीय कम्पनियां प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय संस्कृति पर प्रहार कर रही हैं। मीडिया अपने आत्मबल व दृढ़ शक्ति से इसके वेग को थाम सकता है। हमें विश्वास रखना चाहिए कि भारतीय संस्कृति पर भले ही धूल जम जाये लेकिन वह कभी नष्ट नहीं होगी।



जामगगर। जिला पंचायत प्रमुख डॉ.पी.वी.वसोया, श्रीमती जयबाला, ब.कु.अरुण, ब.कु.सुषमा, ब.कु.जयति शास्त्रत यौगिक खेती कार्यक्रम में।

गुरुकुल परम्परा को पुनःस्थापित करें

ज्ञानसरोवर (माउण्टआबू)।

राजस्थान की राज्यपाल महामहिम मार्गरेट अल्टा ने ब्रह्माकुमारी शिक्षा प्रभाग द्वारा 'नये समाज के निर्माण में शिक्षकों का योगदान' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि इंसान को परमात्मा तक पहुंचने के लिए माध्यम की आवश्यकता रहती है। भले-बुरे का भेद करना तथा हमारे लिए क्या जरूरी है यह जानना ही शिक्षा है। आज शिक्षा एक व्यवसाय का रूप ले चुकी है। प्राचीन गुरुकुल परम्परा जो गुरु व शिष्य के सम्बन्ध को आजीवन बनाए रखती थी वह लुप्त प्रायः हो चुकी है। शिक्षा का अधिकार मिला है मगर समानता के अधिकार समाप्त हो गए हैं। असमानता ने अनेक विसंगतियां पैदा कर दी हैं। कहीं शिक्षा के लिए भवन नहीं हैं तो कहीं शिक्षक नहीं हैं तो कहीं पुस्तकों का अभाव है। जीवन की सच्चाई का सामना करने में विद्यार्थी स्वयं को असमर्थ महसूस कर रहे हैं।



राज्यपाल महामहिम मार्गरेट अल्टा को ईश्वरीय सौगात भेंट करतीं दादी रतनमोहिनी। साथ है ब.कु.मृत्युंजय।

माता-पिता यह सोचते हैं कि बच्चे को किसी अच्छे स्कूल में अधिक डोनेशन देकर दाखिल करा देना ही हमारा फर्ज है, बस इसके बाद की जिम्मेवारी शिक्षक का है। लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि बच्चे की प्रथम गुरु तो माता है। जिम्मेवारी सिर्फ शिक्षक

की नहीं है। आज हमारे शिक्षक बड़े शहरों में ही नौकरी करना चाहते हैं, गांवों में जाना उन्हें पसंद नहीं। शिक्षक में यदि ईमानदारी का गुण नहीं होगा तो वह बच्चों का क्या मार्गदर्शन करेगा। यह एक विडम्बना है कि जिन स्थानों पर शिक्षित वर्ग की बहुसंख्या है वहां

कन्या भ्रूण हत्या का ग्राफ भी अधिक है। चिकित्सकों के परिवार में भी यह अपराध अधिक हो रहे हैं। दहेज की अभिलाषा के कारण हर परिवार बेटा ही चाहता है। इसकी तुलना में गरीब महिलाओं में अधिक ईमानदारी व कर्तव्यपरायणता देखी गई है, शिक्षितों

में इसका अभाव दिख रहा है।

के.सी.सिंघल, कुलपति, जयपुर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज ने कहा कि संत-महात्मा, शिक्षक व इंजीनियर ही देश की तरक्की के आधार हैं। पारिवारिक शिक्षा का हास हुआ है। शिक्षक व छात्रों की बीच का सम्बन्ध श्रद्धा व सम्मान से परिपूर्ण नहीं रहा।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि धर्म का अभिप्राय उन उच्च लक्षणों की धारणा जो पूज्य देवताओं के गये हुए हैं। मनुष्य का शरीर देखने में आता है लेकिन उसको चलाने वाली शक्ति आत्मा को ज्ञान नेत्र से अनुभव किया जा सकता है। जहाँ पवित्रता की शक्ति है वहां सदा शुद्धता है। शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब.कु.मृत्युंजय ने कहा कि शिक्षा को शक्ति माना गया है। शिक्षक ही वह माध्यम हैं जो समाज को मूल्यों से सिंचित कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन ब.कु.ममता ने और धन्यवाद ब.कु.बिन्नी ने किया।

संस्कार प्राप्त होंगे आध्यात्मिक ज्ञान से

ज्ञानसरोवर। पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह की निर्देशिका एवं अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित श्रीमती किरण चोपड़ा ने ब्रह्माकुमारी महिला प्रभाग द्वारा 'वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रगतिशील समाज में जीने का दंभ रखते हुए भी आज हम सुख व शांति की तलाश में लगे हुए हैं। कहने को तो हम मंगल ग्रह पर भी जा पहुंचे हैं लेकिन जीवन में मंगल तलाशने में हम कामयाब नहीं हो पा रहे। संसारिक पढ़ाई के लिए अनेक विश्वविद्यालय हैं लेकिन सच्ची सुख शांति प्राप्त करने की शिक्षा इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही प्राप्त हो सकती है। इनकी विद्वता की मैं कायल हो गई

हूँ। जिन्दगी की सच्चाई को इतनी सहजता से भीतर उतारने की क्षमता इन्हीं ब्रह्माकुमारी बहनों के पास है। इनकी शक्तियों के आगे हम नतमस्तक

हैं। श्रेष्ठ संस्कारों के बिना डिग्रियां प्राप्त करना किसी काम का नहीं है। संस्कार प्राप्त होंगे इस आध्यात्मिक ज्ञान की मदद से। इस शिक्षा को

अपनाकर ही हम स्वयं को संस्कारित कर सकते हैं। असहाय एवं कमजोर महिलाओं की सुरक्षा के लिए सामने आना चाहिए।

गुजरात महिला एवं बाल विकास प्रभाग की सचिव अंजू शर्मा ने कहा कि सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंची महिलाओं में समान रूप से एक विशेषता दिखाई दी है कि उनमें से किसी में भी महिला होने की हीन भावना नहीं थी। अपना सम्मान बनाये रखने के साथ-साथ अन्य महिलाओं का सम्मान करना भी आवश्यक है। कहा जाता है कि नारी ही नारी की दुश्मन है, ऐसा क्यों कहा जाता है यह विचारणीय बात है। लड़के एवं लड़कियों में भेदभाव करना हमारे लिए उचित नहीं है। मैं चाहूंगी कि मुझे अगला जन्म भी एक लड़की के रूप में मिले। महिला भ्रूण हत्या नहीं होने देते ऐसा हम सभी को संकल्प करना है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका (शेष पेज 8 पर)



श्रीमती किरण चोपड़ा, दादी रतनमोहिनी, ब.कु.चक्रधारी, ब.कु.डॉ.सविता तथा अन्य दीप जलाते हुए।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेपल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब.कु.गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bktivv.org, website:www.omshantimedia.info

प्रति